सृजन मञ्जूषा

(द्विमासिक पत्रिका)

वर्ष-३ अंक-१५ Title Code - CHHMUL00048 वि.सं. २०८२ नवम्बर-दिसम्बर २०२५

अमृतकाल का भारत विशेषांक

प्रकाशक :

सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़

आयुर्वेदिक कालेज के पीछे, सरस्वती विहार, रायपुर - ४९२०१० (छ.ग.)

भविष्य का सस्टेनेबल और सीमलेस शहर – नवा रायपुर अटल नगर

बहु-क्षेत्रीय निवेश और विकास की नयी दिशा

रायपुर रेडी शहर, जहाँ हैं निवेश के अनुकूल नीतियाँ, प्लग-एंड-प्ले अवसंरचना और तीव्र अनुमोदन की सुविधा।

- **₹6,000 करोड़** का इलेक्ट्रॉनिक्स क्लस्टर
- **₹1,143 करोड़** का सेमीकंडक्टर प्लांट, **फ़ार्मा-मेडटेक पार्क**, **एआई** एवं **डेटा सेंटर** हब
- **आईटी, शिक्षा** और **लॉजिस्टिक्स ज़ोन**

संतुलित विकास

एक ऐसा शहर जहाँ है जीवन और काम के बीच संतुलन।

- **ग्रिड-लेली** का डिज़ाइन, छायादार फुटपाथ
- मेनरोड से अलग सुरक्षित **साइक्लिंग ट्रैक**
- ज़रूरी सुविधाएँ **सिर्फ़ 10 मिनट की दूरी** पर

जन-केंद्रित परिवहन व्यवस्था

शहरी आवागमन है रायपुर रेडी, कॉम्पैक्ट और फ़ास्ट ।

- गेट्टो के लिए **200 मीटर चौड़ा** केंद्रीय कॉरिडोर
- चौड़ी और सुरक्षित सड़कें, भविष्य में **ई-बसों का संचालन**
- **रेल, एयर** और **रोड कनक्टिविटी** से जुड़ा शहर, जल्द ही अन्तर्राष्ट्रीय उड़ाने भी

स्मार्ट सुविधाएँ, हरित प्रणालियाँ

स्मार्ट टेक्नोलॉजी रोज़मर्रा की ज़िंदगी को और बेहतर बनाती है।

- **24x7 SCADA** प्रबंधित यूटिलिटीज़ – निर्बाध जल और बिजली आपूर्ति
- आवश्यक शहरी सेवाओं की **रियल-टाइम मॉनिटरिंग** और प्रबंधन
- **वर्षा जल संचयन, बायोस्वेल्स** और **40+ ब्रीलों** को पुनर्जीवन

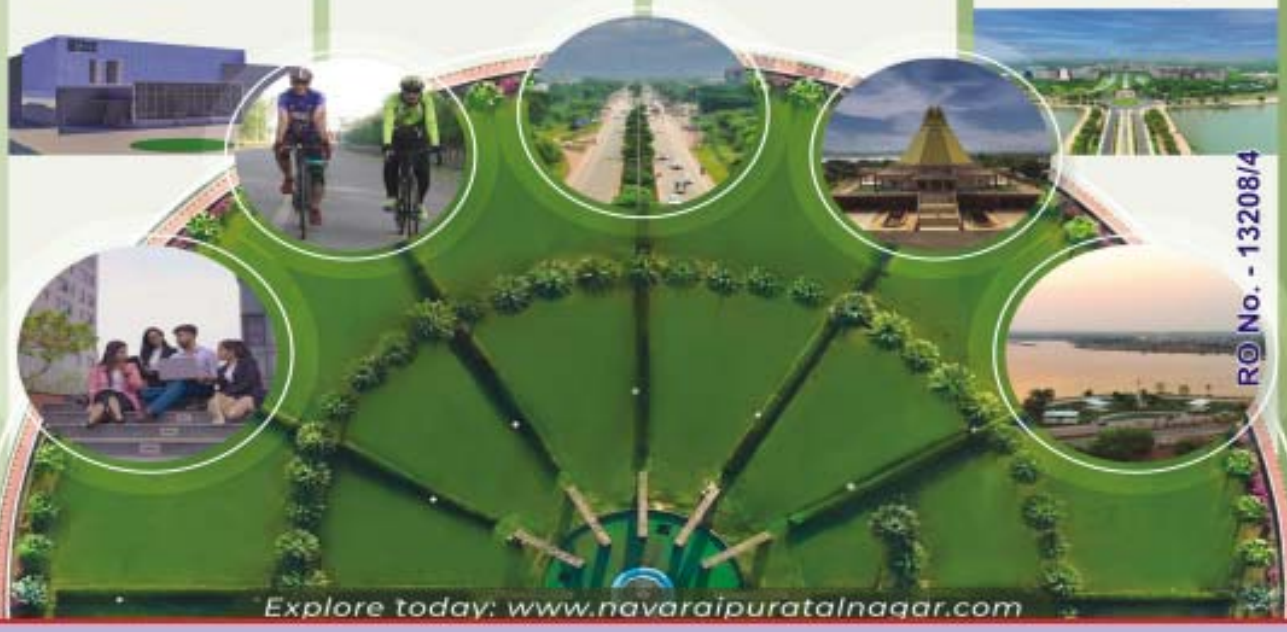

RO No. - 13208/4

Explore today: www.navaraipuratalnagar.com

सृजन मञ्जूषा

अमृतकाल का भारत विशेषांक

(द्विमासिक पत्रिका)

वर्ष - ३ अंक -१५ Title Code - CHHMUL00048 विक्रम संवत् २०८२ नवम्बर-दिसंबर २०२५

संरक्षक

श्री सत्यनारायण अग्रवाल
(वरिष्ठ सदस्य, विद्या भारती मध्य क्षेत्र)
श्री अखिलेश मिश्र
संगठन मंत्री
(विद्या भारती मध्य क्षेत्र)
भालचन्द्र रावले
सदस्य कार्यकारिणी
श्री रामभरोसा सोनी
(अध्यक्ष, सरस्वती शिक्षा संस्थान (छ.ग.)
श्री लक्ष्मण राव मगर
(प्रादेशिक सचिव, सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग.)

परामर्शदाता

डॉ. देवनारायण साहू
(संगठन मंत्री, सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग.)

संपादक

उदय रावले

संपादक मंडल

अशोक कुमार देवांगन
शिरीष दाते

कम्पोजिंग - कौशल साहू, मो.9753211816

मुद्रक - स्वास्तिक प्रिंटरी, पंचमुखी हनुमान मंदिर रोड, पवार सभा भवन के पास न्यू चंगोराभाठा, रायपुर, मो. - 9826446695

प्रकाशक

सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़
आयुर्वेदिक कालेज के पीछे, सरस्वती विहार, रायपुर ४९२०१० (छ.ग.)
दूरभाष : ०७७१-२२६२७७०,
२२६२३९३ २२६२३४२
web side : www.vidyabharticg.org
e-mail:vidyabharticg@gmail.com
e-mail-srijanmanjusha@gmail.com

मूल्य - 40 रुपये प्रति, 240/- वार्षिक

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	श्री उदय रावले	02
2.	सशक्त भारत के निर्माण में शिक्षा की भूमिका	श्री रविन्द्र कान्हेरे	03
3.	देश बढ़ेगा निज गौरव के भान से	अवनीश भटनागर	06
4.	सुदृढ़ सुसंस्कृत और आध्यात्म से परिपूर्ण समाज ही था विश्व गुरू का आधार	भास्कर किन्हेकर	08
5.	भारत प्राचीन काल से अब तक विश्व गुरु बनने की तथा-कथा	संजीव ठाकुर	13
6.	कर्मयोग का जीवन पर प्रभाव	एम.एल. नत्थानी	15
7.	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारत की भूमिका	शताब्दी पाण्डेय	16
8.	सशक्त भारत के निर्माण में शिक्षा का योगदान	रामेश्वर गुप्ता	18
9.	गुरु गोविन्द सिंह के बालकों की बलिदान गाथा	शताब्दी सुबोध पाण्डेय	20
10.	राममंदिर निर्माण और हमारा स्वाभिमान	- रेवाराम सोनी	22
11.	हमारे युवा भ्रमित क्यों?	संकलित	24
12.	अनुशासन की महिमा एवं इसका स्वरूप	संकलित	25
13.	कविता - संजीवनी	संजीव ठाकुर	26
14.	अब तो जागो	डॉ. दीनदयाल यादव	27
15.	सब कहाँ जा रहे हैं	डॉ. दीनदयाल यादव	27
16.	समाचार		28

पत्रिका में छपे हुए लेख लेखकों के अपने विचार हैं।

सम्पादकीय

प्रति,

पाठक गण,

जय राम जी,

ये दारी के अंक हा भारत के अमृत काल के अनेक विषय ला संजोए विद्वान लेखक मन के लेख ला संजोए हे, हमर देश पहली सोन चिरैया कहाय, इंहा समृद्धि के साथ-साथ ज्ञान के भंडार भी रिहीस हे, कपास के महीन कपड़ा विश्व में सबसे पहिले हमरे देस में बनत रिहीस हे। कपड़ा, मसाला, अस्त्र-शस्त्र के व्यापार हमर देस ले होवत रिहीस हे तब ये देस धन-धान्य से भरपूर रिहीस हे, लंबा समय से शांति अउ समृद्धि रेहेसे संघर्ष करना भुलागेन अउ एखरे फायदा विदेसी आक्रांता मन उठाइस हे, अब्बड़ धन इहां ले लूट-लूट के लेगिन हे, कुछ एक मन कुछ साल राज्य भी करीस हे पर हमार देश के वीर सूरमा मन हा ओमन ला टिकन नहीं दीस हे या ओ मन हा हमर सुंदर ज्ञान परंपरा, सर्वसमावेशी संस्कृति व विचार से प्रभावित होके हमरे संग हमर कस हो गीन, कुछ काल बाद मुगल अउ अंग्रेज जैसे धूर्त आक्रमणकारी इंहा अपन पांव जमा लीस अऊ हमर संस्कृति व विश्व विद्यालय तथा ग्रंथ मन ला नुकसान पहुँचा के हमर मन में भरम पैदा करके हमन ला अपन देस-संस्कृति के प्रति हीन भावना भरे के सफल प्रयास करीन हे, ओखर मन के जाल में फंस के हमन हा (आत्म विस्मृत) अपन श्रेष्ठता ला भुलागेन अउ ओहा जेला अच्छा कहाय ओला माने बर लग गेन, हमी मन अपन देश-संस्कृति ला नष्ट करइया बनगेन, हमर देश के धन संपदा ओमन ला देदेन अउ गरीबी, भूखमरी, अज्ञानता, शक्तिहीनता, गुलामी से सजे चादर ला ओढ़के बइठगेन।

पर नींव के मजबूती जब तक हे तब तक ऊपर के मकान जर्जर भी हो जाही तो ओला सुधारे जा सकथे, ओला नया बनाए जा सकथे। ऐसने हमर देस के महान विचारक, क्रांतिकारी, विद्वतजन के सहयोग से हमर गुलामी के भाव ला खेद के नया भारत निर्माण के रद्दा में निकल पड़ें हावन, आज के भारत विकास के क्रम में अपन नवा पहिचान बना ले हे, आधुनिक तकनीकी के उपयोग, विज्ञान, प्रक्षेपास्त्र, ज्ञान के क्षेत्र, उद्योग अउ व्यापार के क्षेत्र में एकदम से बढ़त बना के चलत हावन, अतेक वृद्धि हे के कुछेक देश के आँखी में खटकल हावय। पर हमन ओखर परवाह करे बिना आगे बाढ़तहन।

जनता के विश्वास, सरकार अउ देश के प्रगति के चिंता करइया मन के द्वारा मिले संबल से आज हर क्षेत्र में भारत अपन अलग स्थान बना ले हे। दुनिया के अनेक देश आज भारत से सहायता व सुरक्षा के आसा करत हे। भारत हा शांति के दूत बनगे हे। शक्ति शाली व समर्थ होगे हे? वो हा कैसे शक्तिशाली बने हे, आज कैसे विचार लेके चलत हे। ओखर परिणाम का हे आज के चुनौती काहे, समाधान का हे ये सब विचार आप मनला ये दारी के अंक में पढ़े ला मिलही। 'वसुधैव कुटुम्बकम्', मातापृथिवी पुत्रोऽहम् पृथिव्याः के भाव स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयवहाः आदि हमर सुभाषित् सुविचार के बारे में जाने के, कौन-कौन सा सावधानी हमन ला बरतना हे। अउ आने वाला चुनौती बर कैसे तैयार रहना हे ये सब हमन ला ये अंक मा पढ़े बर अउ जाने बर मिलही। आप मन ला ये हाभाही अइसे मोला लागत हे। आप मन अपन प्रतिक्रिया बताहू तो अउ भाही।

नमस्कार

उदय रावले

संपादक

सृजन मञ्जूषा

सशक्त भारत के निर्माण में शिक्षा की भूमिका

- रवींद्र कान्हेरे
अध्यक्ष विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है। यह केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज के सर्वांगीण विकास का आधार है। एक शिक्षित नागरिक न केवल अपने जीवन को ऊँचाई देता है, बल्कि राष्ट्र को भी सशक्त बनाता है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश के लिए ''शक्तिशाली भारत'' की कल्पना तभी साकार हो सकती है जब उसकी जनसंख्या शिक्षित, जागरूक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाली और राष्ट्रहित में कार्य करने वाली हो। भारत में साक्षरता दर पिछले दशकों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है, परंतु विकसित देशों की तुलना में अभी भी पीछे है। नवीनतम आँकड़ों के अनुसार भारत की साक्षरता दर लगभग 77प्रतिशत है, जबकि विकसित देशों जैसे अमेरिका, जापान, ब्रिटेन और जर्मनी में यह दर 95प्रतिशत से अधिक है। भारत में शिक्षा की पहुँच तो बढ़ी है, परंतु विद्यालय छोड़ने (Dropout) की समस्या अभी भी बनी हुई है। प्राथमिक स्तर पर ड्रॉपआउट दर लगभग 12-14प्रतिशत, और माध्यमिक स्तर पर 17-20प्रतिशत तक पाई जाती है। इसके विपरीत, विकसित देशों में यह दर बहुत कम, लगभग 3-5प्रतिशत ही है। भारत में उच्च ड्रॉपआउट दर के मुख्य कारण हैं-गरीबी, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, संसाधनों की कमी, तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता का अभाव।

शक्तिशाली भारत की कल्पना -''शक्तिशाली भारत'' का अर्थ केवल सैन्य शक्ति या आर्थिक सामर्थ्य से नहीं है, बल्कि यह उस भारत की कल्पना है जो आत्मनिर्भर, नैतिक मूल्यों से प्रेरित, तकनीकी रूप से अग्रणी, पर्यावरण-संवेदनशील, और सामाजिक रूप से समरस हो। ऐसा भारत जहाँ हर नागरिक के पास रोजगार के अवसर हों, महिलाओं को समान अधिकार मिले, और विज्ञान व संस्कृति का संतुलित विकास हो। इस सपने को साकार करने का सबसे प्रभावी माध्यम शिक्षा ही है।

1. कृषि और अन्न उत्पादन में शिक्षा की भूमिका:

भारत कृषि प्रधान देश है। शक्तिशाली भारत के निर्माण के लिए अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता आवश्यक है। भारत विश्व के प्रमुख कृषि देशों में से एक है और अन्न उत्पादन के क्षेत्र में इसका स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। नवीनतम आँकड़ों के अनुसार भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा अन्न उत्पादक देश है आधुनिक कृषि तकनीक, मृदा विज्ञान, जैविक खेती, जल प्रबंधन, और फसल संरक्षण जैसी विधाओं का ज्ञान किसानों तक तभी पहुँच सकता सकता है जब कृषि शिक्षा को व्यापक बनाया जाए। कृषि विश्वविद्यालयों, अनुसंधान केंद्रों और ग्रामीण प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से किसानों को प्रशिक्षित किया जा सकता है।

शिक्षित किसान उर्वरकों और रासायनिक दवाओं का उचित प्रयोग करना जानते हैं, जिससे उत्पादन बढ़ता है और भूमि की गुणवत्ता बनी रहती है। इस प्रकार, कृषि शिक्षा से न केवल अन्न उत्पादन में वृद्धि होती है, बल्कि खाद्य सुरक्षा भी सुनिश्चित होती है।

2. औद्योगिक उत्पादन और तकनीकी शिक्षा:

शक्तिशाली भारत की नींव मजबूत औद्योगिक ढाँचे पर निर्भर है। उद्योगों का विकास तकनीकी शिक्षा और कौशल विकास से ही संभव है। नवीनतम वैश्विक आँकड़ों के अनुसार भारत का औद्योगिक उत्पादन (Industrial Output) विश्व में पाँचवें

से छठे स्थान के बीच माना जाता है। भारत के औद्योगिक क्षेत्र में इस्पात, रसायन, ऑटोमोबाइल, वस्त्र, औषधि (Pharmaceuticals), इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी और मशीन निर्माण प्रमुख उद्योग हैं।

इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, मशीन निर्माण, रोबोटिक्स, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त युवाओं के माध्यम से ''मेक इन इंडिया'' और ''आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों को गति मिल रही है।

शिक्षा से प्रशिक्षित मानव संसाधन न केवल देश में उद्योग स्थापित करते हैं, बल्कि विदेशी निवेश आकर्षित करने में भी भूमिका निभाते हैं। जब उद्योग बढ़ते हैं, तो रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होती है

3. रक्षा क्षेत्र में शिक्षा और विज्ञान की भूमिका: किसी भी राष्ट्र की शक्ति उसकी रक्षा क्षमता से आँकी जाती है। रक्षा क्षेत्र में तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा का विशेष योगदान है। भारत रक्षा उत्पादन में आत्म-निर्भरता की ओर अग्रसर है, लेकिन आयात पर निर्भरता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। इस द्वैध स्थिति का अर्थ यह है कि भारत को अपनी रक्षा खरीद-नीति, उत्पादन क्षमताएँ, तथा निर्यात-प्रवर्तन को और मजबूत करना होगा ताकि आयात-व्यय संतुलित हो सके और रक्षा खर्च का बड़ा हिस्सा देश में उत्पादन के रूप में बहे। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO), इसरो (ISRO), और भारत के विभिन्न रक्षा विश्वविद्यालयों में उच्चस्तरीय शिक्षा से प्रशिक्षित वैज्ञानिक और इंजीनियर देश की सीमाओं की सुरक्षा हेतु अत्याधुनिक हथियार, रॉकेट, मिसाइल, और उपग्रह विकसित कर रहे हैं। रक्षा शिक्षा से न केवल तकनीकी शक्ति बढ़ती है, बल्कि देशभक्ति, अनुशासन और त्याग की भावना भी प्रबल होती है, जो राष्ट्र को भीतर से सशक्त बनाती है।

4. पर्यावरण संरक्षण में शिक्षा की भूमिका: विकास के साथ-साथ पर्यावरण संतुलन बनाए रखना भी आवश्यक है। शक्तिशाली भारत केवल आर्थिक दृष्टि से सशक्त नहीं, बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी सुरक्षित होना चाहिए।

पर्यावरण शिक्षा लोगों में वृक्षारोपण, जल-संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण और जैव विविधता संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाती है। विद्यालय स्तर से ही छात्रों में पर्यावरण-मित्र जीवनशैली अपनाने की भावना विकसित की जानी चाहिए। स्वच्छ भारत अभियान'' और ''हरित भारत अभियान'' जैसी योजनाओं को शिक्षा के माध्यम से ही जन-आंदोलन का रूप दिया जा सकता है। 1982 में प्रारंभ की गई पर्यावरण सूचना प्रणाली (ENVIS) योजना पर्यावरण से संबंधित जानकारी एकत्र कर उसे जनसुलभ बनाती है। इसका उद्देश्य पर्यावरण शिक्षा और अनुसंधान के लिए डेटाबेस तैयार करना है। एक भारत, हरित भारत एवं मिशन लाइफ (Mission Life) को प्रधानमंत्री ने 2021 में प्रारंभ किया। इसका उद्देश्य पर्यावरण-मित्र जीवनशैली को प्रोत्साहित करना और युवाओं में पर्यावरणीय जिम्मेदारी की भावना जगाना है "Reduce - Reuse - Recycle" के सिद्धांत को शिक्षा में शामिल किया गया है।

5. अधोसंरचना विकास में शिक्षा की भूमिका: सड़कें, पुल, विद्युत, जल और संचार व्यवस्था किसी भी राष्ट्र के विकास की रीढ़ होती हैं। इन क्षेत्रों में प्रशिक्षित अभियंताओं, वास्तुविदों और योजनाकारों की आवश्यकता होती है, जो शिक्षा के माध्यम से तैयार होते हैं। तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा से अधोसंरचना निर्माण में न केवल गुणवत्ता आती है, बल्कि नई तकनीक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण का भी समावेश होता है।

एक सुशिक्षित तकनीकी बल के बिना आधुनिक भारत की कल्पना अधूरी है।

6. रोजगार और कौशल विकास: शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ रोजगार सृजन और आत्मनिर्भरता है। नई शिक्षा नीति (NEP 2020) ने व्यावसायिक और कौशल-आधारित शिक्षा

पर विशेष बल दिया है। इसके माध्यम से युवा वर्ग केवल नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि रोजगार सृजन करने वाला बन सकता है। शिक्षा युवाओं को उद्यमिता (Entrepreneurship), डिजिटल स्किल्स, वित्तीय साक्षरता और प्रबंधन जैसे गुण प्रदान करती है। इससे बेरोजगारी में कमी आती है और देश की आर्थिक प्रगति होती है।

7. सामाजिक संरचना और समानता: शिक्षा समाज में समानता और न्याय का आधार है।

जब समाज के हर वर्ग को समान शैक्षणिक अवसर मिलते हैं, तब सामाजिक समरसता बढ़ती है। शिक्षा अंधविश्वास, जातिवाद, लैंगिक भेदभाव, और अन्य सामाजिक कुरीतियों को मिटाने में सहायक होती है। महिलाओं की शिक्षा से परिवारों का विकास होता है, स्वास्थ्य सुधरता है, और समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना होती है। एक शिक्षित समाज ही राष्ट्र की सच्ची शक्ति है।

8. डिजिटल भारत और आधुनिक शिक्षा: 21वीं सदी का भारत तकनीक और नवाचार का युग जी रहा है। डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन लर्निंग, स्मार्ट क्लासरूम और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने शिक्षा को नए आयाम दिए हैं। डिजिटल साक्षरता से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच की दूरी घट रही है। ''डिजिटल इंडिया'' और ''स्किल इंडिया'' जैसे अभियानों से हर नागरिक को ज्ञान और तकनीक से जोड़ने का प्रयास हो रहा है। जब हर नागरिक तकनीकी रूप से सक्षम होगा, तब ही भारत विश्व मंच पर अग्रणी बन सकेगा।

9. नैतिकता, संस्कृति और राष्ट्र निर्माण: केवल तकनीकी शिक्षा पर्याप्त नहीं है; नैतिक और सांस्कृतिक शिक्षा भी आवश्यक है। शक्तिशाली भारत तभी बनेगा जब उसके नागरिक सत्य, अहिंसा, करुणा, अनुशासन और देशभक्ति जैसे मूल्यों को जीवन में अपनाएँ। भारतीय संस्कृति और शिक्षा का उद्देश्य 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के आदर्श पर आधारित रहा है, जो विश्व बंधुत्व की भावना को प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार, नैतिक शिक्षा राष्ट्र की आत्मा को सुदृढ़ करती है।

10. निष्कर्ष: शिक्षा ही वह शक्ति है जो व्यक्ति को अज्ञानता से ज्ञान की ओर, निर्भरता से आत्मनिर्भरता की ओर, और अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। शक्तिशाली भारत का निर्माण केवल नीतियों या योजनाओं से नहीं, बल्कि शिक्षित, जागरूक और नैतिक नागरिकों से संभव है। जब हर बच्चा शिक्षित होगा, हर युवा कुशल होगा, हर महिला सशक्त होगी, और हर नागरिक राष्ट्र हित में कार्य करेगा, तब शक्तिशाली भारत की कल्पना वास्तविकता बनेगी। इसलिए कहा गया है ''शिक्षा ही राष्ट्र की सच्ची शक्ति है।''

⊙⊙

शक्तिमानप्यशक्तोऽसी धनवानपि निर्धनः ।
श्रुतवानपि मूर्खश्च यो धर्मविमुखो नरः ॥

अर्थात जो मनुष्य धर्म से विमुख होता है, धर्म का पालन नहीं करता है, वह शक्तिमान होते हुए भी निर्बल है। धनवान होता हुआ भी निर्धन है और वेदशास्त्र पढ़ने के बाद भी मूर्ख के समान है।

देश बढ़ेगा... निज गौरव के भान से

अवनीश भटनागर, उपाध्यक्ष
विद्या भारती अ.भा. शिक्षा संस्थान

स्वावलम्बी भारत, आत्मनिर्भर भारत, पाँच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने जा रहा भारत, स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, समृद्ध भारत, विकसित भारत.. विश्वगुरु भारत! समाचार पत्र-पत्रिकाओं में, समाचार में चैनलों पर चल रहे समाचारों और बहस में, मंत्रियों राजनेताओं तथा सरकार के उच्च पदस्थ, अधिकारियों के बयानों में दिन में कई बार ये शब्द सुनाई देते हैं। भारत की स्वाधीनता की शताब्दी मनाने तक भारत विश्वगुरु स्थान पर प्रतिष्ठित होगा, यह विचार हमारे मन को प्रफुल्लित करता है, पसन्द आता है, आकर्षित करता है। किसी देश का नागरिक होने के नाते भारत की उन्नति, आर्थिक-सामाजिक विकास का विचार हम सबको अच्छा लगना ही चाहिए क्योंकि राष्ट्र की प्रगति-सबकी प्रगति और सबकी प्रगति राष्ट्र की प्रगति है। अन्ततः हम सबने परंवैभवं नेतुम एतद् स्वराष्ट्रं का स्वप्न लम्बे समय से अपनी आँखों में पाला है न!

हमारे लिए राष्ट्र न तो भौगोलिक परिक्षेत्र का नाम है और न ही राजनैतिक सत्ता का अधिकार क्षेत्र। 'हिमालयात् समारभ्य यावदिन्दु सरोवरम् के रूप में वर्णित इस देवनिर्मित भू-भाग के साथ हमारा माता-पुत्र का सम्बन्ध है- 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।' इसलिए राष्ट्र की प्रगति की हमारी अवधारणा केवल आर्थिक या राजनैतिक दृष्टि से विश्व भर में चलने वाले प्रगति के प्रतिमानों से जुड़े हुए नहीं हैं- न सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की वृद्धि मात्र से और न ही विश्व की राजनीति में भारत के बढ़ते वर्चस्व से, यद्यपि ये भी अस्वीकार्य संकल्पनाएँ नहीं हैं।

एक सहस्र वर्ष से अधिक अवधि से निरंतर हो रहे विदेशी-विधर्मी आक्रमणों तथा रानजैतिक दासता का दंश झेलने के बाद भी भारत, भारत के रूप में बचा रहा, इसका आधार पाश्चात्य विचारकों द्वारा दिया गया राष्ट्र-राज्य सम्बन्ध का सिद्धान्त (Nationa- State Theory) भी नहीं है। हमारे विचार का आधार है- एक मातृभूमि, उसके साथ माता-पुत्र सम्बन्ध का स्थायी भाव, एक सांस्कृतिक राष्ट्र, एक जन और एक माता के पुत्र-पुत्री होने के कारण हमारे साझे सुख-दुःख, हर्ष-शोक, मित्र-शत्रु। ये सम्बन्धों के धागे जितने अधिक सशक्त होंगे और परस्पर जितना अधिक एकात्मभाव दृढ़ होगा, भारत स्वतः आत्म गौरव के भाव से खड़ा होता जाएगा। अर्थात् हमारे लिए सुदृढ़-सुसंस्कृत-समरस- सर्वांगसुन्दर समाज की संरचना ही भारत के विश्वगुरु के रूप में स्थापित होने की यात्रा का प्रथम सोपान है।

विगत एक शताब्दी की घटनाओं का अध्ययन करें तो पाते हैं कि इस अवधि में क्या नहीं झेला भारत ने? दो विश्वयुद्ध, 1930 की मंदी का दौर, बार-बार अकाल-कभी अनावृष्टि और कभी अतिदृष्टि, भारत का विभाजन और उसके बाद मिली स्वाधीनता जोकि वास्तव में केवल राजनैतिक सत्ता हस्तान्तरण ही थी, जिसने इस समाज के असंख्य निरपराध नर-नारियों को विभाजन की विभीषिका की भेंट चढ़ते देखा। 1948 का छद्म युद्ध, 1962, 1965 और 1971 से कारगिल तक के युद्ध एक प्रकार से भारत पर थोपे गए। गलवान घाटी का संघर्ष और एकदम हाल ही में हुई ऑपरेशन सिन्दूर रूपी भारत की प्रतिक्रिया लम्बे समय से चल रही आतंकवादी घटनाओं के लिए भारत का सशक्त उत्तर थे।

राजनैतिक सत्ताएँ आई-गईं। लोकतंत्र के नाम पर गठबंधन की सरकार बनीं- गिरी जिनके पास न तो कोई भविष्य के भारत को लेकर दृष्टि थी, न कार्यक्रम, और यदि थे भी तो

उन्हें धरातल पर लाने के लिए तो सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति थी और न ही साझा सरकारों में शामिल राजनैतिक दलों का राष्ट्र की प्रगति को लेकर कोई दीर्घकालिक साझा विचार।

सिकन्दर से प्रारम्भ कर न जाने कितने शक-हूण-कुषाण-मंगोल, गोरी-गजनी, खिलजी-तुगलक इत्यादि आक्रांता इस देश की समृद्धि से आकर्षित होकर आए, लूट-पाट कर वापस चले गए, कुछ ने थोड़े समय के लिए अपने राज्य बी स्थापित करने का प्रयास किया परन्तु हमारे शौर्यवान पूर्वजों ने या तो उन्हें खदेड़ दिया, या फिर वे धीरे-धीरे इस राष्ट्र की मुख्यधारा में समाहित हो गए। आज उनके वंशज इस देश में खोजने से भी नहीं मिलते। लूट-पाट के बीच अत्याचार हुए। यह देश सह गया। मंदिर और देवप्रतिमाएँ नष्ट-भ्रष्ट की गई। जब उन आक्रान्ताओं के देश में ज्ञान के प्रकाश की कोई किरण बी नहीं थी, तब इस देश में चल रहे विद्यापीठों का विध्वंस किया गया, वहाँ के शिक्षकों और विद्यर्थियों के नृशंस वध किए गए और ग्रंथालय जला दिए गए। सोना-चांदी और बहुमूल्य रत्नों को लूट कर ले जाना तो होगी- शायद केवल यह कि जब हमारे पास नहीं तो इनके पास भी ज्ञान क्यों रहे?

हमारे लिए विचार करने के लिए प्रश्न केवल इतने नहीं हैं। ये केवल मन की पीड़ाएँ हैं, जिनसे धीरे-धीरे वर्तमान पीढ़ी अनभिज्ञ हो गई है। आज विचारणीय है तो यह कि इतने सबके बाद भी हम आज तक एक सुदृढ़ राष्ट्र और जीवन्त संस्कृति कैसे हैं?

इस प्रश्न का उत्तर निहित है हमारे दर्शन में, तत्वचिंतन में, चिंतकों-विचारकों, कवियों-साहित्यकारों, कृषि-मनीषियों द्वारा प्रतिपादित भारत की संस्कृति के मूलभूत सिद्धान्तों और उनके व्यवहार में, अपने स्वत्व को, धर्म-संस्कृति, जीवनदृष्टि और जीवन व्यवहार के संरक्षण के लिए हमारे पूर्वजों द्वारा किए गये अनवरत प्रयासों में जिन्होंने प्राण दे कर भी उस मूलतत्व की रक्षा की। विश्व के अनेक देशों-राज्यों के नाम, राजवंश, राजसत्ताओं को आज कोई जानने या स्मरण रखने वाला नहीं बचा किन्तु यदि हम आज तक भी हैं तो उसका कारण हमारी अक्षुण्ण रही सांस्कृतिक धारा में ध्वनित होता है।

जिस प्रकार किसी व्यक्ति की प्रकृति होती है, वैसे ही राष्ट्र की भी अपनी प्रकृति होती है। भारत की मूल प्रकृति अध्यात्म है। यह केवल विभिन्न ग्रंथों में लिखित अवधारणा नहीं है और न ही केवल शास्त्रार्थ या प्रवचन का विषय। ईश्वर का जैसा एक अंश मेरे अन्दर है, वैसा ही एक अंश सबमें है- मनुष्य-पशु, जीव-जन्तु, वृक्ष-वनस्पति, नदी-पर्वत में भी। इस स्वरूप में अध्यात्म सामान्य व्यक्ति के जीवन व्यवहार में अनुस्यूत है। सब प्रकार का संघर्ष करके, सभी कष्ट सहकर के भी हमारी पिछली पीढ़ियों ने इस मूल प्रकृति को बचाकर रका है। यही अध्यात्म हमारे देश में प्रचलित सांस्कृतिक परम्पराओं-मान्यताओं, रीति-रिवाजों, व्रत-उत्सव-पर्वों, लोकगीत-संगीत में झलकता है।

'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की मान्यता से चलने वाला अपना समाज सभी प्राणियों के परति एकात्मता का भाव रखता है। भारत के जन-मन में बसी यही व्यवहारिक अध्यात्म दृष्टि ही संपूर्ण राष्ट्र को एकजुट बनाती है। यह भाव आज अनेक पाश्चात्य उपसंस्कृति के आक्रमण के कारण थोड़ा-बहुत धूमिल होता दिखाई देने लगा है। धीरे-धीरे अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं और आध्यात्मिक विचार पद्धति को त्यागने के कारण समाज में विद्रूपताएँ दिखती हैं किन्तु विश्वास रखना चाहिए कि यह विकृतियाँ समाज की बुद्धि के परिष्कार तथा भारत की मूल संस्कृतिधारा के प्रवाह में समय के साथ विलुप्त हो जायेंगी और भारत माता पुनः अपने संपूर्ण वैभव के साथ विश्वगुरु के सिंहासन पर विराजमान दिखेगी।

⊙⊙

सुदृढ़, सुसंस्कृत और आध्यात्म से परिपूर्ण समाज ही था विश्व गुरू का आधार

- **भास्कर किन्हेकर**
सेवानिवृत्त मंडल प्रबंधक
जीवन बीमा निगम रायपुर

भारत अन्य देशों से अलग कैसे है, इसकी पड़ताल हम करेंगे।

सामान्य रूप से विश्व में दो प्रकार की संस्कृति और व्यवहार दिखाई देते हैं। एक संस्कृति या विचार ऐसा है जो दूसरों को किसी भी कीमत पर अपने जैसा और अपने अधीन बनाने की आकांक्षा रखता है। अपने जैसा बनाने के लिए जबरदस्ती, शोषण, युद्ध, कत्लेआम आदि करने में भी यह हिचकिचाता नही। और तो और बौद्धिक षड्यंत्र कर सकता है।

दूसरी संस्कृति या विचारधारा ऐसी है जो सभी के सत्व का विचार करती है। सभी के विचारो का आदर करती है, उसे बनाए रखने में सहायता करती है। ऐसा करने से दोनों एक दूसरे से प्रभावित होते है, सहज परिवर्तन भी होता रहता है और फिर भी मूल तत्व बना रहता है। स्वाभाविक रूप से पहली शैली यूरोपियन और दूसरी भारतीय शैली है ।

यह तो सर्वविदित है कि भारतीय संस्कृति विश्व में अति प्राचीन है। केवल प्राचीन ही नहीं तो सुव्यवस्थित, सुनिश्चित और सुसंस्कृत है । प्रसिद्ध लेखक और इतिहासकार आर. सी. अग्रवाल अपनी पुस्तक कल्चर एंड डेमोक्रेसी इन इंडिया में लिखते है 'भारत की संस्कृति चिरंतन है, जो 5000 वर्षों से भी अधिक पहले विकसित हुई है। इसने आने वाली भारतीय पीढ़ियों के मानसिक क्षितिज, मूल्य व्यवस्था और जीवन शैली को विकसित किया है। जो आज के अनेक विदेशी आक्रांता और विपुल जनसंख्या के विस्तार के बाद भी आश्चर्यजनक रूप से बरकरार है। यह आज भी भारतीयों और भारत के लोगों को एक अलग व्यक्तित्व प्रदान करती है। जैसा कि पहले भी देती आई है।'

इतिहासकार एवं राष्ट्र की संकल्पना के अंतरराष्ट्रीय अध्येता सर विसेंट स्मिथ लिखते हैं कि ''बिना किसी संदेह के भारत के पास अंतर्निहित मूलभूत एकता है, जो राजनीतिक संप्रभुता या भौगोलिक विगलन से ज्यादा शक्तिशाली है। यह एकता जाति, धर्म, वंश, रंग भाषा और रिती रिवाज की तमाम विभिन्नताओं को पार करती है । यहां वेद काल से ही एक पवित्र घोषणा है कि पृथ्वी समुद्र पर्यंत एक राष्ट्र है।''

भारत के संबंध में भारतीय इतिहास की अज्ञानता और उसकी अस्पष्ट समझ के कारण अंग्रेजों ने राष्ट्र के रूप में भारत को समझने से इंकार कर दिया। या यह कहें कि वे निहित राजनीतिक उद्देश्य के कारण भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखना या समझना चाहते ही नहीं थे। इसीलिए वे कहते थे कि भारत एक राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में है। भारत को एक राष्ट्र के रूप स्थापित करने का श्रेय स्वयं लेना चाहते थे। यही दृष्टिकोण साम्यवादियों का भी रहा। यह एक लंबा विषय है कि भारत को टुकड़े-टुकड़े में दिखाने का झूठा विमर्श पैदा करने में अंग्रेजों और साम्यवादियों का साझा हित कैसा था? इसके लिए कैसे कैसे बौद्धिक षडयंत्र रचे गए। यही कारण है कि अंग्रेजों के देश से चले जाने के बाद भी इस षड्यंत्र को अपने राजनीतिक हित के लिए स्वतंत्र भारत मे भी जारी रखने का काम साम्यवादियों ने किया।

परंतु भारत की मूल चेतना को खारिज कर देना इतना आसान भी नही था। सर्वोच्च न्यायालय ने डॉ प्रदीप जैन के मामले में इस वास्तविकता की पहचान की है। जब न्यायमूर्ति पी एन भगवती ने यह टिप्पणी की 'इतिहास का यह रोचक तथ्य है कि राष्ट्र के रूप में भारत का निर्माण ना तो एक समान भाषा के आधार पर हुआ, ना ही इसके भूभाग पर एक राजनीतिक सत्ता के निरंतर अस्तित्व के कारण, बल्कि इसका

आधार सदियों से विकसित हुई एक समान संस्कृति के कारण हुआ। यह एक सांस्कृतिक एकता है, देश के लोगों को एकजुट रखने वाले दूसरे बंधनों से ज्यादा मजबूत व आधारभूत, जिसने इस देश को राष्ट्र में पिरोया'।

1905 में एक महाविद्यालय में व्याख्याता रहे मोहम्मद इक्बाल बड़े कवि थे। वे अपने प्रसिद्ध गीत ''सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा'' में लिखते है–

यूनान – मिस्र –रोमा सब मिट गए जहां से

– अब तक मगर है बाकी नामोनिशा हमारा

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी

सदियों रहा दुश्मन दौर ए जहां हमारा

जब इकबाल साहब ,''कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी'' कहते हैं तो उनका भी आशय हमारी अमिट प्राचीन संस्कृति और शाश्वत मूल्यों से ही है, जिसकी उन्होंने गहरी अनुभूति तो की पर शब्द नही दे पाए।

हमारी सांस्कृतिक विरासत हजारों वर्षो से संचित नैतिक मूल्य हैं, जिसकी विशेषता है कि जिसे विद्वान दार्शनिकों से लेकर जन सामान्य तक अपनी सहज बुद्धि से समझ लेता है और अपने जीवन के व्यवहार में स्वाभाविक रूप से समाहित भी कर लेता है। ये बात भी सच है कि सामान्य तौर पर इसे अनुभूत करने वाला व्यक्ति भी इसको शायद शब्दो मे व्यक्त नही कर पाए, पर जीवन मे उतार लेता है। भारतीय संस्कृति की इसी विशेषता ने इसे शाश्वत बना दिया।

अध्यात्म हमारी संस्कृति का ही एक अविभाज्य अंग है, और भारतीय जीवन पद्धति में इतना गहरे तक समाया हुआ है कि उसको अलग करके समझना कठिन है। राष्ट्र, समाज, आध्यात्म और संस्कृति आपस मे इतने एकरस हैं कि किसी एक के बिना दूसरे आयाम की कल्पना ही नही की जा सकती।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी किताब हिंदुस्तान की कहानी (डिस्कवरी ऑफ इंडिया) में भारत को, इसके इतिहास को विभिन्न दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया है , यद्यपि इस किताब में दिए गए अनेक विचारों से इत्तेफाक रखना या नही रखना व्यक्तिगत विकल्प हो सकता है। परंतु यह बात भी सत्य है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अंग्रेजी साहित्य का गहन अध्ययन किया है और उनकी अवधारणा सामान्यतया पाश्चात्य विचारों और साहित्य से प्रभावित है। फिर भी उन्होने पाश्चात्य विचारकों के ही साहित्य से भारत के गौरव पूर्ण इतिहास के विषय में जो कुछ लिखा है वह संदर्भित करने योग्य है ट्ठट्ठ

''यह सही है कि हमारे सामने बहुत कुछ ऐसा था जिसे मिटा देना ही मुनासिब था ,लेकिन अगर हिंदुस्तान में कोई ऐसी चीज न होती जो कायम रहने कि काबिल और जिंदा थी और जिसकी सचमुच कीमत थी , तो यह यकीनी है कि हजारों साल वह अपनी तहजीब और वजूद को कायम न रख सकता था। यह चीज क्या थी ? मैं पाता था कि तहजीब की एक पृष्ठभूमि है जो उनकी, भारतीयों की जिंदगी पर गहरा असर डाल रही है । यह पृष्ठभूमि साधारण फलसफे ,परंपरा, इतिहास, पुराण की कल्पित कथाओं के मेलजोल से तैयार हुई थी। और इन विविध अंगों को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता था।.....जो लोग बिल्कुल अनपढ़ और अशिक्षित थे, उनकी भी यही पृष्ठभूमि थी। अपने पुराने महाकाव्य रामायण, महाभारत से , और दूसरी किताबों से, सुगम अनुवादों या संक्षेपों के जरिए जनता अच्छी तरह परिचित थी । और एक एक घटना और उपदेश उनके मन में टंके हुए थे और इस तरह उनके दिमाग भरे पूरे थे। अनपढ़ देहातियो को भी सैकड़ों पद्य जबानी याद थे। और उनकी बातचीत में इन पद्यों या किसी प्राचीन कथा या उपदेश के हवाले आते रहते थे । मुझे इस बात पर अचरज होता था कि गांव के लोग आजकल की साधारण बातों को साहित्यिक लिबास दे देते थे। अगर मेरे दिमाग में लिखे हुए इतिहास कमोवेश जाने हुए वाक्यों के चित्र भरे हुए थे, तो मैंने अनुभव किया कि अनपढ़ किसान के दिमाग में भी एक चित्रशाला थी। हां इसका आधार परंपरा , पुराण कि कथाएं , महाकाव्य के नायक और नायिका के चरित्र थे। इसमें इतिहास कम था, फिर भी चित्र सजीव थे।

सिंधु घाटी की सभ्यता के विषय में सिन्धु घाटी सभ्यता के अध्येता जॉन मार्शल का संदर्भ देते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू कहते हैं कि (जॉन मार्शल के शब्दों मे) ''मोहनजोदड़ो और हड़प्पा इन दोनों जगहों पर एक चीज जो साफ तौर पर जाहिर होती है, और जिसके बारे में कोई धोखा नहीं को सकता ,वह यह है कि इन दोनों जगहों में जो सभ्यता हमारे सामने आई है , वह कोई इब्तदाई सभ्यता नहीं है , बल्कि ऐसी है, जो उस समय ही युगों पुरानी पड़ चुकी थी, हिंदुस्तान की जमीन पर मजबूत को चुकी थी और उसके पीछे आदमी का कई हजार साल का पुराना कारनामा था। इस तरह आगे जॉन मार्शल कहते हैं कि यह सभ्यता ईरान, मैसोपोटामिया और मिस्र कि सभ्यता से जुदा होते हुए ,भी कुछ बातों में उनसे ज्यादा तरक्की पर थी। इस सभ्यता के संबंध में मार्शल आगे लिखते हैं कि ''उस जमाने में रुई का कपड़ा बनाने काम केवल हिंदुस्तान में होता था। पश्चिमी दुनिया में 2000 –3000 साल बाद तक यह नहीं फैला । उसी प्रकार हमाम या कुशादा घर मिस्र या अन्य सभ्यताओं में नहीं पाए जाते थे। एक और महत्वपूर्ण बात जॉन मार्शल कहते है कि अवशेषों से उनका धर्म इतनी विशेषताओं से साथ हिंदुस्तानी है कि आजकल के प्रचलित हिंदू धर्म से उसका भेद मुश्किल से किया जा सकता है।'

पंडित जवाहरलाल नेहरू अपनी किताब में महात्मा गांधी के आंदोलन और उपनिषदों की सीख का तारतम्य जोड़ते हुए लिखते हैं कि 'कारगर तरक्की हासिल करने कि लिए उपनिषदों में तन की चुस्ती मन कि पवित्रता और तन–मन दोनों के संयम पर बराबर जोर दिया गया है ।

चाहे ज्ञान सीखना हो चाहे दूसरी कामयाबी हासिल करना हो, संयम, तप और कुर्बानी (त्याग) जरूरी होती है । किसी न किसी तरह की तपस्या का ख्याल हिंदुस्तानी विचारधारा का एक अंग है और ऐसा ख्याल ना सिर्फ चोटी के विचारको के यहां है ,बल्कि साधारण जनता में फैला हुआ है । और अगर गांधीजी की रहनुमाई में हिंदुस्तान को हिला देने वाले जनता के आंदोलन के पीछे जो मनोवृति काम करती है उसे हम समझना चाहते हैं तो जरूरी है कि हम इस ख्याल (विचार) को समझें।'

अध्यात्म ,राष्ट्र और समाज के संबंधों को महात्मा गांधी बड़ी सीधी सरल भाषा मे समझाते है। महात्मा गांधी हिंद स्वराज में राष्ट्र के विषय में अपनी स्पष्ट अवधारणा रखते हुए सरल किंतु कठोर शब्दों में कहते हैं ''एक राष्ट्र का अर्थ यह नहीं कि हमारे बीच कोई मतभेद नहीं था। लेकिन हमारे पुरखे पैदल या बैलगाड़ी में हिंदुस्तान का सफर करते थे। वह दूसरे की भाषा सीखते थे। उनके बीच कोई अंतर नहीं था। जिन दूरदर्शी पुरुषों ने सेतुबंध रामेश्वर जगन्नाथ पुरी हरिद्वार की यात्रा कराई उनका आपकी राय में क्या ख्याल रहा होगा? वह मूर्ख नहीं थे, यह तो आप कबूल करेंगे वे जानते थे कि ईश्वर भजन घर बैठे भी होता है । उन्होंने ही लिखा है कि मन चंगा तो कठौती में गंगा । उन्होंने सोचा कि कुदरत ने हिंदुस्तान को एक देश बनाया है। इसलिए उसे एक राष्ट होना चाहिए । उन्होंने अलग–अलग स्थान तय करके एकता का विचार इस तरह दिया जैसा दुनिया में और कहीं नहीं दिया गया है। जितने दो अंग्रेज एक नहीं है, उतने हम हिंदुस्तानी एक थे और एक हैं। सिर्फ हम और आप जो खुद को सभ्य मानते हैं, उनके मन में ऐसा आभास पैदा हुआ कि हिंदुस्तान में अलग –अलग राष्ट्र है।''

बाकी दुनिया मे धर्म और विज्ञान के बीच हमेशा द्वंद होता रहा। परंतु हम जिस धर्म या अध्यात्म की बात करते है तो हमारी संस्कृति में दोनों एक दूसरे के पूरक रहे है।

प्राचीनतम उपनिषदों के अंदर वर्णन आता है कि शौनक ऋषि जब महर्षि अंगीरा के पास जाते हैं और ज्ञान प्राप्ति की याचना करते हुए महर्षि अंगिरा से कहते हैं कि

'कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वम् इदं विज्ञात भवतीति ।'

अर्थात, वो कौन–सी बात है, जिसको जान लेने के बाद और कुछ जानना – शेष नहीं रह जाता।

इस पर महर्षि अंगीरा उत्तर है देते हैं, 'द्वै विद्ये वेदितव्ये इतिहस्म परा चैव अपरा च' अर्थात् एक परा विद्या है, दूसरी अपरा विद्या है। आगे फिर उसकी व्याख्या करते हैं। परा विद्या और अपरा विद्या इन दोनों को जानने से ही वास्तविकता को जानना होगा। इसका अगर आज की भाषा में विश्लेषण करना हो तो कहा जाएगा कि अपरा विद्या यह विज्ञान है और परा विद्या धर्म है। महर्षि अंगीरा ने कहा कि दोनों को जानने की जरूरत है और ये दोनों एक-दूसरे के विरोधी नहीं। इसलिए हमारे यहां पर धर्म कभी भी प्रयोगशीलता का विरोधी नहीं रहा। शंकराचार्य जैसे व्यक्ति जब गीता के अपने भाष्य में लिखते हैं कि अगर सैकड़ों श्रुतियां भी यह कहे - कि अग्नि शीतल होती है तो मैं उसको नहीं मानूंगा, क्योंकि यह प्रत्यक्ष अनुभूति के विरूद्ध है। इसलिए हमारे यहां पर किसी ग्रंथ कोई बात लिखी है जो प्रत्यक्ष अनुभूति के विरुद्ध है तो उसे नकारने का साहस भी हमारे चिंतकों में था। इसी लिए हमारे यहां कभी कोई द्वंद खड़े नही हुए। प्रयोगशीलता हमारे यहां पर स्वाभाविक रूप से रही।

संस्कृति, व्यक्ति और समाज के संबंध श्री मुरलीमनोहर जोशी दीनदयालजी के विषय मे कहते है।

कई बार हम लोग उनसे पूछते रहते थे कि पंडित जी, संस्कृति क्या होती है? वे बड़े ही सरल ढंग से समझा देते थे, कि ''भाई देखो, प्रकृति तो बिलकुल बोधगम्य है। मनुष्य को भूख लगती है-यह उसकी प्रकृति है। दूसरे के साथ बांट कर खाना चाहिए-यह इस भूख लगने वाली नैसर्गिक प्रकृति का एक विकास है-मानवीय समाज को स्वस्थ रखने के लिए, इसको ठीक रखने के लिए; यही संस्कृति है। दूसरे से छीनकर खा जाओ, यह विकृति है। यदि व्यक्ति अपने आत्मा और विश्वात्मा का अनुभव करता है तो वह संस्कृति की ओर स्वभावत: ही चल पड़ता है।'' इसलिए पंडित जी कहते थे कि व्यष्टि और समष्टि का सम्यक् सम्बन्ध होना चाहिए। व्यक्ति यदि सूक्ष्म है तो समष्टि विराट है व्यष्टि यदि बूंद है तो समष्टि सागर है। यहीं वसुधैव कुम्बकम का मूल है।

समाज , व्यक्ति और संस्कृति सम्यक सार्थक प्रभाव अन्य क्षेत्रों में भी देखा जा सकता है। भारत केवल ज्ञान का भंडार ही नही था, वरण दुनिया की आर्थिक महाशक्ति भी था। गुप्त काल या मौर्य काल के उन्नत व्यवस्था के विषय मे तो हम सब जानते हैं, परंतु अंग्रेजों के आने के पहले तक अर्थात 17वीं शताब्दी तक भारत की अर्थव्यवस्था पर अगस मेडिसन अपनी किताब ''1000 वर्ष का आर्थिक इतिहास'' में वह लिखते हैं की 17 वी शताब्दी में भारत की विश्व अर्थव्यवस्था में 33 प्रतिशत भागीदारी थी। यह विश्व का सबसे धनी देश था।'' स्मरण रहे लंबे युद्ध के इतिहास के बाद भी भारत की यह आर्थिक स्थिति 17 वीं शताब्दी में थी।

17 वीं शताब्दी तक उच्च गुणवत्ता के लोहे के दुनिया का बड़ा उत्पादक भारत था। 17 वीं शताब्दी तक भारत की अर्थव्यवस्था पर सरकार का सीधा नियंत्रण नही रहा। भारत की अर्थ व्यवस्था समाजाधारित थी। समाज के अलग अलग समूह विभिन्न क्षेत्रों के व्यवसाय में स्वायत्त थे। वास्तव में जनभागीदारी के साथ चलने वाली अर्थ व्यवस्था हो , शिक्षा की व्यवस्था हो, स्वास्थ्य व्यवस्था हो या गांव शहरों का प्रबंधन हो, हमारी सभ्यता और संस्कृति से उपजी विकेन्द्रीकृत व्यवस्थाएं थी। जिसे अंग्रेजों ने समाप्त कर दिया।

नालंदा और तक्षशिला के कारण उस काल की उन्नत शिक्षा व्यवस्था के विषय मे तो सब जानते , परंतु 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक बंगाल में नवद्वीप उच्च शिक्षा का प्रख्यात केंद्र था। विशेष रुप से विधि विषय का यह प्राचीन केंद्र रहा था। विलियम जोंस ने तृतीय यूनिवर्सिटी के रूप में इसका उल्लेख किया है। इस विषय पर 1790 के दशक में इंग्लैंड में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। इस विश्व विद्यालय में 18वी सदी के उत्तरार्ध तक कई हजार छात्र तथा सैकड़ों शिक्षक थे। श्री धर्मपाल के साहित्य में 18वी शताब्दी की शिक्षा, उन्नत कृषि, तकनीक और स्वास्थ्य इन सब विषयो पर अध्ययन पूर्वक लिखा गया है।

भारत मे महिलाओ की सहभागिता हमेशा पुरुषों के

बराबर रही। उपनिषदों के रचना से लेकर महाराजा दशरथ के साथ युद्धस्थल सहयोग करती महारानी कैकइ तक, लोकमाता अहिल्या बाई से लेकर महारानी लक्ष्मीबाई तक। मध्यकाल में भारत आये इतावली यात्री के लिए गांवों में भी महिलाओं की सामाजिक स्थिति काफी चौंकाने वाली थी। एक इतालवी रईस, पिएत्रो डेला वैले, भारत आए। वे ईरान से होकर आए थे, जहाँ उन्होंने ईरान के शाह का साक्षात्कार लिया था। ईरान के बाद, वे दक्षिण भारत आए, जहां पहुँचने पर, उन्होंने गाँव के मुखिया से मिलने का अनुरोध किया। गाँव वालों ने उन्हें बताया कि मुखिया खाई खोदे जाने का निरीक्षण कर रही थी। वे खेत की ओर बढ़े और एक महिला को आते देखा, जो रसोई की नौकरानी लग रही थी और उसने चप्पल नहीं पहनी थी। पिएत्रो डेला वैले ने कहा कि उसकी बुद्धिमत्ता और व्यावहारिक प्रश्नों ने उन्हें ईरान के शाह की याद दिला दी, जिनका उन्होंने साक्षात्कार लिया था।

और अन्त मे ---

हिमालय से लेकर हिंद महासागर तक भारत सर्वदा से ही एक भूमि है। वे उत्तरी–पश्चिमी सीमा प्रांत के जरिए आए हों या दक्षिणी–पश्चिम से, खैबर से आए हों या केरल के जरिए, सभी ने इसे इंडिया कहा, जिसका अर्थ भारत–भूमि है। इस भूमि की चर्चा वेदों, पुराणों और बाद के साहित्यों में हुई है। महान एकीकर्ता आदि शंकराचार्य ने इस धरती के चारों कोनों पर चार मठों की स्थापना की।

संस्कृति की आधार शिला हमारे सर्वांगीण जीवन शैली का निर्माण करती है। यह हमें मानव–मानव के बीच, मानव व राज्य के बीच, मानव व प्रकृति के बीच तथा मानव व उदात्त ईश्वर के बीच के संबंधों के बारे में निर्देशित करती है। यह मूल्यों, व्यवहारों और सामाजिक समरसता की अलिखित संहिता का उल्लेख करती है। यहां पर हमारे अस्तित्व व उद्देश्यों में अन्तर्निहित एकता है, ऐसा हमेशा महसूस होता है। यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि मानवीय व्यवहारों की यह संहिता, विश्व में शांति व प्रसन्नता की राह दिखाएगी। यह विशाल उद्घोष है, इस देश की यही नियति है, जो इसे भारत को विश्व गुरु के रूप में प्रतिष्ठित करेगी।

लेखक –भास्कर कीन्हेकर , सेवानिवृत्त सहायक मंडल प्रबंधक, जी. बी. नि.

⊙⊙

कड़कड़ाती सरदी में एक व्यक्ति ने दो साधुओं को एक–एक कंबल भेंट किए। साधु यात्रा पर जा रहे थे। रात में एक धर्मशाला में ठहरे। सोते समय एक साधु के मन में आया कि कहीं रात में कोई कंबल चुरा न ले, इसलिए उसने कंबल सिरहाने रख लिया और सो गया।

जब दूसरा साधु सोने लगा तो उसने देखा कि दो बच्चे सरदी से ठिठुर रहे हैं। उसने वह कंबल उन बच्चों को दे दिया और सो गया। रात में धर्मशाला में चोर घुस आए उन्हें और कुछ तो मिला नहीं तो वे साधु के सिरहाने लगा कंबल ही चुराकर ले गए।

सुबह जब वह साधु जगा तो कंबल खोया देखकर बहुत अधिक दु:खी हुआ। जबकि दूसरा साधु जिसने ने कंबल का दान कर दिया था, वह प्रसन्न था। सचमुच किसी भी वस्तु का राग सदैव दु:खदायी होता है और त्याग सदैव सुखदायी।

भारत प्राचीन काल से अब तक विश्व गुरु बनने की तथा-कथा

संजीव ठाकुर
लेखक,चिंतक,स्तंभकार, रायपुर छत्तीसगढ़, 9009 415 415,

भारतवर्ष ऐतिहासिक तौर पर एक ऐसा देश रहा है जिसने अपनी संस्कृति सनातनी शक्ति एवं ऊर्जा से वैश्विक नेतृत्व किया है बीच के कुछ काल में अवश्य कुछ विदेशी आक्रांताओं ने देश पर हमला कर विदेशी प्रभाव छोड़ा है किंतु आज भारत इस स्थिति में है कि वह विश्व का सक्षम नेतृत्व कर सकता है।

भारत ही एक ऐसा देश है जिसने सदियों से दुनिया को ज्ञान, संस्कृति, विज्ञान और नैतिकता का संदेश दिया है। ''विश्व गुरु'' बनने का मतलब केवल ताकत या धन में आगे होना नहीं है, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और नैतिक नेतृत्व में दुनिया के लिए उदाहरण बनना है। यह वह स्थिति है, जो भारत ने प्राचीन काल से लेकर आज तक हमेशा हासिल करने की कोशिश की है। प्राचीन भारत में शिक्षा और विज्ञान का स्तर अत्यंत ऊँचा था। हमारे यहाँ वेदों और उपनिषदों में जीवन, ब्रह्मांड और मानव चेतना के रहस्यों का अध्ययन हुआ। शून्य और दशमलव पद्धति की खोज ने पूरी दुनिया में गणितीय ज्ञान को आसान बनाया। आर्यभट्ट और वराहमिहिर ने खगोल विज्ञान और गणित में अद्वितीय योगदान दिया। सुश्रुत और चरक ने आयुर्वेद और शल्य चिकित्सा में ऐसी खोजें कीं, जो आज भी विश्व में मान्य हैं। योग और ध्यान ने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का विज्ञान प्रस्तुत किया।

धर्म और दर्शन के क्षेत्र में भी भारत ने दुनिया को दिशा दिखाई। बौद्ध और जैन धर्म ने अहिंसा और नैतिकता का संदेश फैलाया। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों ने जीवन, नैतिकता और सही-असही की पहचान करने का मार्ग दिखाया। भारतीय संगीत, नृत्य, कला और वास्तुकला ने दुनिया में हमारी सांस्कृतिक पहचान बनाई। इस समय भारत केवल शक्ति का केंद्र नहीं था, बल्कि ज्ञान और संस्कृति का मार्गदर्शक बन चुका था।

मध्यकाल में जब राजनीतिक स्थिति अस्थिर थी और कई विदेशी आक्रमण हुए, तब भी हमारी संस्कृति और शिक्षा जीवित रही। संस्कृत साहित्य, आयुर्वेद, ज्योतिष और तंत्र का अध्ययन जारी रहा। इस समय भारतीय कला और वास्तुकला ने नई शैली अपनाई और समृद्धि पाई। खगोल विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान में भी प्रगति जारी रही। इस समय भारत का प्रभाव केवल राजनीतिक शक्ति से नहीं, बल्कि ज्ञान और संस्कृति के माध्यम से दूर-दूर तक महसूस किया गया।

ब्रिटिश शासन में भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता और आर्थिक शक्ति सीमित हो गई, लेकिन ज्ञान और संस्कृति की महत्ता कम नहीं हुई। राजा राममोहन राय और स्वामी विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति और योग को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के मार्ग से दुनिया को नेतृत्व का नया उदाहरण दिया। इसी समय जगदीश चंद्र बोस और सी. वी. रमन जैसे वैज्ञानिकों ने भारत का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चमकाया।

स्वतंत्रता के बाद भारत ने आधुनिक विज्ञान, तकनीक, अर्थव्यवस्था और संस्कृति के क्षेत्र में तेज़ी से प्रगति की। आईटी और डिजिटल इंडिया ने भारत को दुनिया में तकनीकी शक्ति बनाया। ISRO के चंद्रयान और मंगलयान अभियानों ने यह दिखाया कि भारत अंतरिक्ष अनुसंधान में भी अग्रणी है। फार्मास्युटिकल्स और बायोटेक में भारत वैश्विक आपूर्ति केंद्र बन गया। योग और आयुर्वेद का प्रचार, बॉलीवुड और संगीत के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रसार, और संयुक्त राष्ट्र जैसे

मंचों पर भारत की सक्रिय भागीदारी ने आधुनिक भारत को विश्व गुरु बनने की दिशा में आगे बढ़ाया है।

बेशक चुनौतियाँ अभी भी हैं। गरीबी और असमानता, शिक्षा और अनुसंधान में सुधार की जरूरत, और वैश्विक राजनीति में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। लेकिन अवसर भी बहुत हैं। अगर हम अपने ज्ञान, संस्कृति और नैतिकता का सही इस्तेमाल करें, तो दुनिया के लिए प्रेरणा बन सकते हैं। विज्ञान और तकनीक में आगे बढ़कर हम पर्यावरण और सतत विकास में उदाहरण पेश कर सकते हैं।

भारत ने हर युग में यह दिखाया कि अगर प्रयास और दृष्टि सही हों, तो विश्व गुरु बनना संभव है। प्राचीन काल में ज्ञान और संस्कृति के माध्यम से, मध्यकाल में संरक्षण और अनुकूलन के द्वारा, औपनिवेशिक काल में पुनरुत्थान और स्वतंत्र भारत में तकनीक, अर्थव्यवस्था और संस्कृति के संयोजन से यह सपना हकीकत बन सकता है। भारत का विश्व गुरु बनना केवल ताकत या संपत्ति से नहीं मापा जाएगा, बल्कि ज्ञान, संस्कृति, नैतिकता और आध्यात्मिकता के संतुलन से मापा जाएगा।

आज अगर हम अपने प्राचीन ज्ञान और संस्कृति, आधुनिक विज्ञान और तकनीक, और नैतिक नेतृत्व को साथ लेकर चलें, तो यह सपना निश्चित रूप से सच हो सकता है। हर भारतीय, चाहे छोटा हो या बड़ा, ग्रामीण हो या शहर का निवासी, इस सफर का हिस्सा बन सकता है। भारत फिर से विश्व गुरु बन सकता है न केवल इतिहास की वजह से, बल्कि हमारी आज की मेहनत और आने वाली पीढ़ियों की सोच के कारण।

⊙⊙

एक बार एक व्यक्ति को टहलते हुए अपने बाग में किसी टहनी से लटकता हुआ एक तितली का कोकून दिखाई पड़ा। अब हर रोज वह व्यक्ति उसे देखने लगा और एक दिन उसने देखा कि उस कोकून में एक छोटा-सा छेद बन गया है। उस दिन वह वहीं बैठ गया और घंटों उसे देखता रहा। उसने देखा कि तितली उस खोल से बाहर निकलने की बहुत कोशिश कर रही है, पर बहुत देर तक प्रयास करने के बाद भी वो उस छेद से नहीं निकल पाई और फिर वो बिलकुल शांत हो गई, मानो उसने हार मान ली हो। उस व्यक्ति ने उस तितली की मदद करने के उद्देश्य से कोकून के सुराख को इतना बड़ा कर दिया कि वो तितली सरलतापूर्वक बाहर निकल सके।

यही हुआ। तितली बिना किसी संघर्ष के आसानी से बाहर निकल आई, पर उसका शरीर सूजा हुआ था और पंख सूखे हुए थे। वह व्यक्ति यह सोचकर तितली को देखता रहा कि वह किसी भी समय पंख फैलाकर उड़ेगी। पर बेचारी तितली कभी उड़ नहीं पाई और उसे अपनी बाकी जिंदगी इधर-उधर घिसटते हुए ही बितानी पड़ी।

दरअसल, वह व्यक्ति अपनी दया और जल्दबाजी में यह नहीं समझ पाया कि कोकून से निकलने की प्रक्रिया को प्रकृति ने इतना कठिन इसलिए बनाया है, ताकि ऐसा करने से तितली के शरीर में मौजूद तरल पदार्थ उसके पंखों में पहुँच सके और वो छेद से बाहर निकलते ही उड़ सके।

वास्तव में कभी-कभी हमारे जीवन में संघर्ष ही वह चीज होती है, जो हमें मजबूत बनाती है। यदि हम बिना संघर्ष के सब कुछ पा लेंगे तो अपंग हो जाएँगे, हमारी शक्तियों का विकास नहीं हो पाएगा।

कर्म योग का जीवन पर प्रभाव

एम. एल. नत्थानी
अध्यापक / सलाहकार
पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़
मोबाइल - 9893333786

भूमिका - हमारे दैनिक जीवन में कर्म योग का बाह्य एवं आंतरिक प्रभाव सतत् रूप से परिलक्षित होता है। यह जीवन में सकारात्मक एवं नकारात्मक ऊर्जा के साथ ही व्यक्तिगत संतुलन को भी नियंत्रित करता है। वस्तुत- कर्म योग से ही मनुष्य को आंतरिक शांति और व्यक्तिगत विकास में सहायता मिलती है। यह व्यक्ति को अपने अहंकार को त्याग कर सन्मार्ग की ओर प्रेरित भी करता है। इसके अलावा कर्म योग से ही शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद मिलती है।

कर्म योग के जीवन पर प्रभाव -

1 आंतरिक शांति और संतुलन

2 अहंकार में कमी

3 व्यक्तित्व का विकास

4 लक्ष्य प्राप्ति में सहायक

5 शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार

6 निस्वार्थ भाव

7 कर्तव्य एवं जिम्मेदारी की भावना

कर्म योग के सिद्धांत -

श्रीमद्भागवत गीता के श्लोक क्रमांक 47 के अनुसार कर्म विज्ञान के संदर्भ में इन चार निर्देश दिए गए हैं -

* अपना कर्तव्य पूरा करो , लेकिन फल की चिंता मत करो।

* तुम्हारे कर्मों का फल, तुम्हारे भोग के लिए नहीं है।

* कर्म करते हुए भी कर्ता पन का अभिमान त्याग दो ।

* कभी भी अकर्म आसक्त मत हो।

कर्म योग के संबंध में मान्यताएं -

योग दर्शन में कर्म, कारण और प्रभाव का नियम प्रतिपादित किया गया है। जिसके अनुसार हमारे द्वारा किए गए प्रत्येक कार्य का परिणाम अनिवार्य होता है।

फिर चाहे वह तत्काल हो या भविष्य में परिणित हो। हमारे द्वारा सकारात्मक कर्मों के परिणाम स्वरूप से सकारात्मक कर्म प्रतिक्रिया

प्राप्त होती है, जबकि नकारात्मक कर्मों का परिणाम सदैव बुरा कर्म ही होता है। ऐसी मान्यता है कि, हमारे कर्म जन्मों - जन्मों तक पीछा करते हैं।

इसलिए ही पिछले जन्मों के कर्मों के परिणाम भी वर्तमान जीवन में वापस आते हैं।

कर्म योग से लाभ -

* अहंकार कम करना

* कर्म को संतुलित करना

* प्रार्थमिकता स्पष्ट करना

* कर्तव्यों का पालन करना

निष्कर्ष -

इस प्रकार से कर्म योग द्वारा संचालित हमारे भविष्य की घटनाएं संयोग वश ही उत्पन्न नहीं होती, अपितु वे वास्तविक रूप में हमारे पूर्व और वर्तमान कर्मों के प्रभाव से ही घटित होती है। इस प्रकार हमारा प्रारब्ध (भाग्य) हमारे कर्म योग द्वारा ही निर्धारित होता है। अत: हमारी वर्तमान स्थिति हमारे पूर्व कर्मों का परिणाम है। यही

कर्म योग का तार्किक और सुसंगत विश्लेषण श्रीमद्भागवत गीता में भगवान श्री कृष्ण द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इसी

अनुक्रम में भारत में वर्षा, नदी और संत निस्वार्थ भाव के प्रतीक माने जाते हैं। कर्म योग द्वारा मनुष्य अपने जीवन में ज्ञान (समझ),क्षमा भाव एवं करुणा से जीवन चक्र के

अनंत भंवर से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारत की भूमिका

''वसुधैव कुटुम्बकम् से मानवता तक - भारत की चेतना, विश्व की दिशा''

शताब्दी सुबोध पांडे, छत्तीसगढ़

विश्व सभ्यता आज ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहाँ विज्ञान और तकनीक का तेज़ी से विकास तो हो रहा है, किंतु उसके समानांतर मानवीय संवेदनाओं का क्षय भी उतनी ही तीव्र गति से दिखाई देता है। विकास की दौड़ में मनुष्य अपनी आत्मा को पीछे छोड़ चुका है। शक्ति, धन और सामर्थ्य की प्रतिस्पर्धा ने विश्व को युद्ध, हिंसा और असमानता की गर्त में धकेल दिया है। यूरोप से लेकर एशिया तक, और अमेरिका से लेकर अफ्रीका तक - हर भूभाग किसी न किसी संकट का सामना कर रहा है। कहीं युद्ध की ज्वाला है, कहीं पर्यावरण की

वैश्विक स्थिति: संघर्ष, विभाजन और मूल्य-संकट

आज की विश्व व्यवस्था को यदि एक शब्द में परिभाषित किया जाए तो वह शब्द होगा ''अस्थिरता'' । महाशक्तियों की राजनीति ने विश्व को पुन: शीतयुद्ध जैसी परिस्थितियों में पहुंचा दिया है। यूरोप में चल रहा युद्ध केवल दो देशों का नहीं, बल्कि विश्व अर्थव्यवस्था की नब्ज को प्रभावित करने वाला संकट है। पश्चिम एशिया की धरती निरंतर रक्तरंजित है, और मानवता वहाँ कराह रही है।

दूसरी ओर, जलवायु परिवर्तन ने जीवन की मूलभूत आवश्यकता- जल और वायु को ही संकटग्रस्त त्रासदी, तो कहीं आर्थिक अस्थिरता ने जीवन को असंतुलित कर दिया है।

ऐसे विषम समय में जब समस्त मानवता दिशाहीनता के भंवर में फंसी प्रतीत होती है, तब भारत का उदय एक संस्कृति-सूर्य के रूप में हो रहा है- जो न केवल अपने देशवासियों के लिए, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो रहा है। भारत का दृष्टिकोण केवल राष्ट्रवादी नहीं, बल्कि वसुधैव कुटुम्बकम् की विराट भावना से ओतप्रोत है।

ग्लेशियर पिघल रहे हैं, वर्षा के चक्र बिगड़ रहे हैं, और धरती अपने प्राकृतिक संतुलन को खो रही है। तकनीकी युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी अद्भुत उपलब्धियाँ भी तब भय उत्पन्न करने लगती हैं जब उनका नियंत्रण नैतिकता से हटकर केवल लाभ और स्वार्थ पर केंद्रित हो जाता है।

यह सारा परिदृश्य एक गहरी चेतावनी है कि यदि मानव ने अपनी दिशा नहीं बदली तो सभ्यता स्वयं अपने ही हाथों विनाश का कारण बन जाएगी।

भारत: विश्व के लिए आशा की किरण

इन सबके बीच भारत वह भूमि है जहाँ समाधान केवल नीतियों में नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन में निहित है। भारत का इतिहास सिखाता है कि जब-जब संसार अंधकार में डूबा, तब-तब यहाँ से प्रकाश निकला है।

बुद्ध ने करुणा का संदेश दिया, महावीर ने अहिंसा का, और श्रीकृष्ण ने कर्मयोग का। गुरु नानक ने एकता की बात कही, और स्वामी विवेकानंद ने विश्व को भारतीय संस्कृति का मर्म समझाया।

आज उसी भारत ने फिर से विश्व मंच पर अपनी पहचान स्थापित की है। ''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'' का विचार केवल एक राजनयिक नारा नहीं,

भारतीय दृष्टि और सांस्कृतिक दर्शन

भारत की आत्मा उसकी संस्कृति में बसती है। यह संस्कृति किसी एक धर्म, जाति या भाषा की नहीं, बल्कि उस व्यापक चेतना की है जो ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' के भाव से उत्पन्न होती है। भारत यह मानता है कि विश्व तभी शांति पा सकता है जब प्रत्येक मनुष्य अपने भीतर के देवत्व को पहचान ले। यहाँ विकास का अर्थ केवल बल्कि एक सनातन सत्य है जो भारत की आत्मा से उपजा है। भारत की यह आवाज़ अब सलाह नहीं, बल्कि दिशा बन चुकी है।

विश्व में जब स्वार्थ और प्रभुत्व की होड़ बढ़ रही है, भारत ने सहयोग और साझेदारी का मार्ग चुना है। जब अन्य राष्ट्र हथियारों पर गर्व कर रहे हैं, भारत ने 'मानवता के अस्त्र' को अपनाया है। कोविड महामारी के समय भारत ने ''वैक्सीन

मैत्री'' के माध्यम से 100 से अधिक देशों को जीवनदायी औषधि पहुंचाकर यह सिद्ध किया कि यह राष्ट्र केवल अपने लिए नहीं, समस्त मानवता के लिए जीता है।

भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि आत्मिक उत्कर्ष भी है। भारतीय चिंतन यह सिखाता है कि मनुष्य जब तक प्रकृति, समाज और अपने अंत:करण से संतुलन नहीं साधेगा, तब तक कोई भी प्रौद्योगिकी या शासन व्यवस्था स्थायी सुख नहीं दे सकती है।

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था-

''मनुष्य में निहित शक्ति को पहचानो, वही सच्चा धर्म है। बाहरी साधन से नहीं, आंतरिक जागरण से ही राष्ट्र का उत्थान होता है।''

यही भारत की विशेषता है- यहाँ प्रगति का मार्ग नैतिकता, आत्मसंयम और आध्यात्मिक जागरण से होकर जाता है।

आत्मनिर्भर भारत: आधुनिक युग में पुनर्जागरण

आज का भारत नई ऊर्जा और आत्मविश्वास से भरा हुआ है। आत्मनिर्भर भारत केवल आर्थिक नीति नहीं, बल्कि आत्म-सम्मान का उद्घोष है। विज्ञान, अंतरिक्ष, रक्षा, शिक्षा, खेल, महिला सशक्तिकरण- हर क्षेत्र में भारत ने अपने दम पर विश्व में नया इतिहास रचा है।

चंद्रयान-3 की सफलता यह प्रमाण है कि भारत का विज्ञान केवल अनुसंधान नहीं, आस्था और स्वप्न का संगम है। ''डिजिटल इंडिया'' ने गाँव-गाँव तक पहुंच बनाई है।

नई विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका

जग विश्व पूँजी और साम्राज्यवाद के पुराने ढाँचे से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा है, तब भारत संतुलन का केंद्र बन गया है।

भारत न पश्चिम का अंधानुकरण करता है, न पूर्व की रूढ़िवादिता में जकड़ा हुआ है। वह दोनों के बीच एक मध्यम मार्ग प्रस्तुत करता है जो वैज्ञानिक भी है और आध्यात्मिक भी। यही भारत का योगदान है -

"Modernity with Morality."

आधुनिक भारत का स्वर पहुँचाया है। ''स्टार्टअप इंडिया'' ने युवा शक्ति को यह विश्वास दिया है कि भविष्य किसी विदेशी पूँजी पर नहीं, भारतीय प्रतिभा पर आधारित है।

भारत अब केवल उपभोक्ता नहीं, सृजनकर्ता बन चुका है। यह वह युग है जब भारत विचार, संस्कृति और नीति तीनों स्तरों पर विश्व को दिशा दे रहा है।

संयुक्त राष्ट्र में भारत की पहल, पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में 'LIFE' मिशन, और ग्लोबल साउथ के देशों के प्रति भारत की सहानुभूति, यह सब दर्शाती हैं कि भारत आज ''सॉफ्ट पावर'' नहीं बल्कि ''सांस्कृतिक पावर'' के रूप में उभरा है। वह विश्व को यह सिखा रहा है कि शांति हथियारों से नहीं, विचारों से आती है।

वर्तमान विश्व को केवल नीतियों या समझौतों की नहीं, बल्कि दृष्टि और दिशा की आवश्यकता है। भारत के पास वह दृष्टि है जो हजारों वर्षों की सभ्यता और अनुभव से परिपक्व हुई है।

यह वह भूमि है जहाँ वेदों ने कहा ''संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्'' अर्थात,

जब संसार विभाजन की ओर बढ़ता है, तब भारत एकता की बात करता है। जब मानवता भयभीत होती है, तब * भारत करुणा का दीप जलाता है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो, और एक मन से कार्य करो। यही भारत का संदेश है यही विश्व के भविष्य की कुंजी भी।

आज का भारत न झुकने वाला है, न रुकने वाला है। वह आगे बढ़ रहा है, लेकिन अकेला नहीं अपने साथ पूरी मानवता को लेकर।

और जब अंधकार गहराता है, तब भारत ही वह ज्योति बनकर जग को दिशा दिखाता है।

-भारत की आत्मा अमर है वही आत्मा आज विश्व को नया जीवन देने जा रही है।''

''यह भूमि केवल भौगोलिक नहीं, यह चेतना की भूमि है जहाँ से विश्व का पुनर्जागरण प्रारंभ होगा।''

⊙⊙

सशक्त भारत के निर्माण में शिक्षा का योगदान
(संदर्भ – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

रामेश्वर गुप्ता संयोजक
बिलासा कला मंच,बिलासपुर

परिवर्तन सतत चलने वाली प्रक्रिया है।समय के साथ हमे हर क्षेत्र में परिवर्तन देखने को मिलते हैं।सशक्त भारत के निर्माण में शिक्षा का योगदान सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसी क्रम में शिक्षा के क्षेत्र में भी परिवर्तन आवश्यक हो गया था जिसे NEP 2020 ने अथक मेहनत, शोध,साक्षात्कार,अनेक संगठनों के राय, शिक्षा मनीषियों के विचार,शिक्षकों के सुझाव, आम जनता की राय के बाद पूरे देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की गई। इससे शिक्षा व्यवस्था में कई बड़े और बुनियादी बदलाव देखने को मिलेंगे। यह केवल किताबों या पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे शिक्षा–तंत्र को बदलने वाली नीति है।

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होती है। यह व्यक्ति को न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि विचार, संस्कार, और जिम्मेदारी का बोध भी कराती है। एक शिक्षित समाज ही राष्ट्र को सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर बना सकता है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि यही माध्यम है जो देश की सांस्कृतिक एकता, आर्थिक प्रगति और सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करता है।

इसी दिशा में भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) लागू की है, जो 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप एक दूरदर्शी और परिवर्तनकारी नीति है। यह नीति केवल पाठ्यक्रम में बदलाव नहीं करती, बल्कि शिक्षा को जीवन से जोड़ती है। इसका उद्देश्य ऐसा भारत बनाना है जो ज्ञान, कौशल, नवाचार और मूल्यों से सशक्त हो।

1. ज्ञान और कौशल से सशक्त नागरिक का निर्माण

NEP 2020 का मुख्य उद्देश्य है कि हर विद्यार्थी केवल डिग्री प्राप्त न करे, बल्कि जीवनोपयोगी ज्ञान और कौशल भी हासिल करे।" कक्षा 6 से ही वोकेशनल शिक्षा, इंटर्नशिप, और कौशल आधारित प्रशिक्षण शुरू किया गया है। इससे विद्यार्थी आत्मनिर्भर बनेंगे और ''आत्मनिर्भर भारत'' के सपने को साकार करेंगे।

2. मातृभाषा में शिक्षा – ज्ञान की जड़ों से जुड़ाव

नीति के अनुसार, कक्षा 5 तक शिक्षा मातृभाषा या स्थानीय भाषा में दी जाएगी। यह न केवल बच्चों की समझ को गहरा करती है, बल्कि उन्हें अपनी संस्कृति, परंपरा और मूल्यों से जोड़ती है। एक ऐसा नागरिक जो अपनी जड़ों से जुड़ा है, वही देश के प्रति सच्ची निष्ठा और जिम्मेदारी निभा सकता है।

3. नवाचार और अनुसंधान की भावना

NEP 2020 में National Research Foundation की स्थापना का प्रस्ताव है, जो देश में अनुसंधान को प्रोत्साहन देगा। नवाचार (innovation) ही किसी भी राष्ट्र की प्रगति की कुंजी है। जब विद्यार्थी प्रयोगशील और सृजनशील सोच अपनाते हैं, तब वे समाज और देश की चुनौतियों का समाधान स्वयं खोज सकते हैं।

4. समावेशी और समान शिक्षा

यह नीति सुनिश्चित करती है कि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे — चाहे वह आर्थिक, सामाजिक या भौगोलिक कारणों से हो। इस तरह यह नीति समाज के हर वर्ग को साथ लेकर चलने वाली है, जो सशक्त भारत की सबसे बड़ी पहचान है।

5. उच्च शिक्षा में लचीलापन और बहुविषयक

दृष्टिकोण

NEP 2020 ने उच्च शिक्षा को लचीला (Fle&ible) और बहुविषयक (Multidisciplinary) बनाया है।ज्ञ अब विद्यार्थी विज्ञान, कला, वाणिज्य के बंधनों से मुक्त होकर अपनी रुचि और प्रतिभा के अनुसार विषय चुन सकता है। ऐसा शिक्षित युवा वर्ग ही देश को नए विचार, तकनीकी प्रगति और विश्वस्तरीय पहचान दिला सकता है।

6. शिक्षक -राष्ट्र निर्माण के निर्माता

नीति में शिक्षकों के प्रशिक्षण, गुणवत्ता और सम्मान पर विशेष बल दिया गया है। एक प्रेरक शिक्षक केवल पढ़ाता नहीं, बल्कि समाज में विचारों की मशाल जलाता है। इस प्रकार, नीति का यह पहलू भारत के बौद्धिक और नैतिक सशक्तिकरण का आधार है।

7. डिजिटल और आधुनिक भारत की दिशा में कदम

NEP 2020 ने शिक्षा में डिजिटल माध्यमों, ऑनलाइन शिक्षा, और टेक्नोलॉजी आधारित सीखने को बढ़ावा दिया है। यह भारत को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाता है और ग्रामीण क्षेत्रों तक ज्ञान का प्रसार करता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को केवल नौकरी पाने का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का साधन मानती है। यह नीति ऐसा भारत बनाने की दिशा में अग्रसर है, जो ज्ञानवान, आत्मनिर्भर, नवाचारी और मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण हो। यही नीति भारत को ''विश्वगुरु'' के उस स्थान तक ले जाएगी, जहां से वह पुन: विश्व को मार्ग दिखा सकेगा।डिजिटल क्रांति के इस दौर में तेजी से बदलते सूचनाओं और ज्ञान के भंडार से छात्रों को लगातार update रखना इस नीति की विशेषता है।सरकार अब स्कूलों को स्मार्ट क्लास के रूप में विकसित करके शिक्षा के आधुनिकीकरण में लग गई है जिससे हमारा देश और सशक्त बन जाये।

⊙⊙

कर्म करने से मनुष्य बँधता है, ऐसा एक व्यक्ति ने सुन रखा था। उसने अपनी जिज्ञासा एक संत के सम्मुख रखी व उनसे पूछा- ''महाराज! यदि में कर्म न करूँ, मात्र चिंतन करूँ तो क्या मैं कर्मबंधनों से नहीं बँधूंगा।''

संत उसे समझाते हुए बोले- 卐पुत्र ! ये तुमने कैसे सोच लिया कि विचार करना, कर्म करना नहीं है। विचार सूक्ष्मस्तर का कर्म है। समय की तरह मनुष्य को विचार-प्रवाह को भी सत्प्रयोजनों में निरत रखना चाहिए। मन का निग्रह करने पर ही निष्काम कर्म संभव है; क्योंकि कार्य तो परिणति है, उसका मूल रूप विचार ही है। विचार सधेंगे तो कर्म स्वत: ही सध जाएँगे। उस व्यक्ति को जीवन जीने के लिए उपयोगी दिशा मिल गई।

गुरु गोविंद सिंह जी के बालकों की बलिदान गाथा

(धर्म, साहस और अमर आस्था की अनुपम कहानी)

शताब्दी सुबोध पांडे, छत्तीसगढ़

भारतीय संस्कृति का इतिहास त्याग और बलिदान से ओतप्रोत है। यह वह भूमि है जहाँ धर्म की रक्षा के लिए माँ अपने पुत्रों को स्वयं रणभूमि में भेजती है, जहाँ बालक भी अन्याय के विरुद्ध डटकर खड़े होते हैं। इस दिव्य परंपरा के शिखर पर यदि कोई नाम अमर ज्योति की तरह दमकता है तो वह है- गुरु गोविंद सिंह जी और उनके चार साहिबजादों का।

वीरता का प्रारंभिक संस्कार

गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने बालकों का पालन किसी राजकुमार की तरह नहीं, बल्कि धर्मयोद्धाओं की भाँति किया। वे स्वयं उन्हें घुड़सवारी, धनुर्विद्या, शस्त्र संचालन और ग्रंथ अध्ययन सिखाते थे। इन नन्हें बालकों में बचपन से ही दृढ़ता, अनुशासन और धर्म के प्रति लगाव था। दसवें सिख गुरु, गुरु गोविंद सिंह जी न केवल धार्मिक संत थे बल्कि एक असाधारण योद्धा, कवि और राष्ट्रनायक भी थे। उन्होंने सिख पंथ को ऐसी दिशा दी जिसमें श्रद्धा के साथ-साथ साहस और आत्मरक्षा की भावना भी निहित थी। उनका जीवन संदेश देता है कि धर्म की रक्षा केवल उपदेश से नहीं, अपितु कर्म से होती है। यही शिक्षा उनके चारों पुत्रों ने अपने जीवन से साकार की।

उनके हृदय में अटूट आस्था का बीज रोपा गया था। गुरु जी के लिए यह केवल पारिवारिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उत्तरदायित्व था कि उनकी संतानें न्याय, साहस और करुणा के प्रतीक बनें।

आनंदपुर साहिब की घेराबंदी

सन 1704 ईस्वी में मुगल बादशाह औरंगज़ेब और उसके साथ मिले पहाड़ी राजाओं ने मिलकर आनंदपुर साहिय पर आक्रमण किया। महीनों तक घेराबंदी रही, अन्न और जल की कमी होने लगी, किंतु गुरु गोविंद सिंह जी ने आत्मसमर्पण से इंकार कर दिया। जब स्थिति अत्यंत कठिन हो गई, तो गुरु जी ने अपनी संगत को सुरक्षित स्थानों की ओर जाने का निर्देश दिया। इस क्रम में उनका परिवार भी बिखर गया एक ओर गुरु जी के साथ दो बड़े पुत्र रहे और दूसरी ओर माता गुजरी जी के साथ दो छोटे बालक रहे।

चामकौर का रण - साहिबजादा अजीत सिंह और जुजार सिंह का अमर बलिदान

गुरु जी जब चामकौर के किले में पहुँचे, तब चारों ओर शत्रु सेना का घेरा था। संख्या में बहुत कम होने के बावजूद उन्होंने दृढ़ता से प्रतिरोध किया। तभी उनके दो बड़े पुत्र - साहिबजादा अजीत सिंह (लगभग 18 वर्ष) और साहिबजादा जुजार सिंह (14 वर्ष) ने अपने पिता से युद्धभूमि में उतरने की आज्ञा मांगी। गुरु जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा ''पुत्रों, धर्म की रक्षा ही सर्वोच्च कर्तव्य है।'' इन शब्दों को सुनकर दोनों बालक रणभूमि में उतरे और सैकड़ों शत्रुओं को परास्त किया। अंतत: वे वीरगति को प्राप्त हुए। गुरु जी ने स्वयं उनकी वीरता को ''अमर आत्माओं की यात्रा कहा। यह केवल एक पिता के पुत्रों की मृत्यु नहीं थी, यह धर्म के लिए आत्मोत्सर्ग का आरंभ था।

सिरहिंद का कारागार निर्दयता और अटल विश्वास की पराकाष्ठा

दूसरी ओर, माता गुजरी जी अपने दो छोटे पोतों- साहिबजादा जोरावर सिंह (9 वर्ष) और साहिवजादा फतेह सिंह (7 वर्ष) के साथ अलग होकर भटक रही थीं। वे एक व्यक्ति गोविंद के घर पहुंचीं, जिसने विश्वासघात कर उन्हें वज़ीर खान के सैनिकों को सौंप दिया। सिरहिंद पहुँचने पर बजीर खान ने बालकों को इस्लाम स्वीकार करने की धमकी दी। उन नन्हें बच्चों के चेहरे पर कोई भय नहीं था। उन्होंने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया ''हम अपने पिता गुरु गोविंद सिंह जी के पुत्र हैं। हम अपना धर्म नहीं बदलेंगे।''

वज़ीर खान ने अनेक लोभ और धमकियाँ दाँ, परंतु

वालकों के संकल्प को डिगा नहीं सका। जब उसने आदेश दिया कि उन्हें जीवित दीवार में चुनवा दिया जाए, तब भी उन्होंने शौर्य और शांत भाव से कहा–''जो सत्य के मार्ग पर चलता है, उसे मृत्यु से भय नहीं होता।''

किसी बालक के लिए यह कल्पना से परे यातना थी– किंतु साहिबजादों ने अपने कर्तव्य को निभाते हुए बलिदान दे दिया। उनकी माता गुजरी जी, जो पास के बुर्ज में बंद थीं, जब यह समाचार सुनकर प्रभु का स्मरण करती हुई समाधिस्थ हो गई।

एक माँ का त्याग और एक पिता का संकल्प

गुरु गोविंद सिंह जी तक जब चारों पुत्रों के बलिदान का समाचार पहुँचा, तो उन्होंने आकाश की ओर नजर उठाकर कहा– ''हे प्रभु! तूने मेरे चार नहीं, लाखों पुत्रों को जन्म दिया है जो धर्म की राह पर चलेंगे।''

बलिदान का अर्थ और उसका शाश्वत प्रभाव

चारों साहिबजादों की गाधा केवल सिख इतिहास का गौरव नहीं, बल्कि समस्त भारतीयता की आत्मा है। यह कथा हमें सिखाती है कि धर्म के लिए आयु, स्थिति या शक्ति कोई बंधन नहीं होती। इन नन्हें बालकों ने जो आदर्श प्रस्तुत किया, वह आज भी हर भारतीय के हृदय में साहस का दीप प्रज्वलित करता है। उन्होंने हमें सिखाया कि धर्म पर अडिग रहना ही सच्ची विजय है।

अमर आत्माओं की प्रेरणा

गुरु गोबिंद सिंह जी और उनके बालकों की यह गाथा केवल इतिहास नहीं, बल्कि चेतना है। यह उस संस्कृति की पहचान है जिसमें धर्म, न्याय और मानवता सर्वोपरि हैं। आज जन आधुनिक जीवन में मूल्य और विश्वास यह वाक्य इतिहास के पन्नों पर सदा के लिए अंकित हो गया। एक पिता का यह उत्तर बताता है कि उसका दृष्टिकोण केवल पारिवारिक नहीं, बल्कि सार्वभौमिक था– वह समूचे मानवता के धर्मरक्षक थे।

आज फतेहगढ़ साहिच में बने स्मारक उनके अदम्य बलिदान की स्मृति को जीवित रखते हैं। हर वर्ष ''साहिबजादा शहीदी सप्ताह'' के रूप में दिसंबर का अंतिम सप्ताह उनकी स्मृति में मनाया जाता है। श्रद्धालु जब उनके बलिदान को स्मरण करते हैं तो यह भाव जागृत होता है कि धर्म के पच पर चलने वाला कभी अकेला नहीं होता उसके साथ सत्य और ईश्वर स्वयं चलते हैं।

डगमगाने लगते हैं, तब साहिबजादों की स्मृति हमें पुनः स्मरण कराती है कि–

सत्य के लिए डटे रहना ही सबसे बड़ा धर्म है।

उनके बलिदान से झरता संदेश है–

''जो धर्म के पथ पर अडिग रहता है, मृत्यु में भी अमरत्व प्राप्त करता है।''

⊙⊙

गुरु नानकदेव सात्त्विक जीवन जीते तथा प्रभु-स्मरण करते थे। एक बार उनके पास एक व्यक्ति आया और बोला – ''बाबा! मैं चोरी तथा अन्य अपराध करता हूँ। मेरा जीवन सुधर जाए, ऐसा कोई उपाय बताइए।'' गुरु नानक जी ने कहा– ''तुम चोरी या अन्य गलत काम करना बंद कर दो, तो तुम्हारा कल्याण हो जाएगा।'' वह व्यक्ति उन्हें प्रणाम करके लौट गया। कुछ दिनों बाद वह फिर आया और बोला –''बाबा गलत काम छूट नहीं रहे।'' इस पर गुरु नानक जी बोले–''भैया! तुम अपने द्वारा किए सभी गलत कामों के बारे में दूसरों को बता दिया करो।'' चोर ने अगले दिन चोरी की, लेकिन उसकी दूसरों को बताने की हिम्मत ही नहीं हुई। उसे लगा कि लोग उससे घृणा करने लगेंगे। उसने सोचा कि दूसरों को बताने से तो यही बेहतर है कि मैं चोरी ही करना छोड़ दूँ। कुछ दिनों बाद उसने गुरु नानक जी को जाकर बताया – ''बाबा आपके सुझाए तरीके ने मुझे अपराधमुक्त कर दिया है। अब मैं मेहनत की कमाई से गुजारा करता हूँ।''

राम मंदिर निर्माण और हमारा स्वाभिमान

रेवा राम सोनी
पूर्व सचिव/अध्यक्ष
ग्राम भारती रायपुर

राम मंदिर का निर्माण ''राष्ट्रीय'' ''स्वाभिमान'' और भारतीय संस्कृति व आस्था का प्रतीक माना जाता है, अनेको लोगों के लिए यह सदियों से चलें आ रहे संघर्ष और बलिदानों के बाद एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। आहत स्वाभिमान की पुर्नस्थापना'' है।

मंदिर निर्माण को सनातन और भारत के कं शौर्य का प्रदर्शन भी कहा गया है। यह न केवल धार्मिक आस्था का केन्द्र है बल्कि भारत को प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का भव्य प्रतीक भी है।

किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र की जीवन्तता का प्रमाण उसकी अपनी सुरक्षित भौगोलिक सीमाओं के अतिरिक्त उस देश की भाषा-भूषा, संस्कृति, रहन-सहन, अचार-विचार, देश का पर्यावरण कानून व्यवस्था धर्म और उसकी धार्मिक आस्था और गौरव, तथा राजनीतिक व्यवस्था किसी मौलिक स्वतन्त्र देश का प्राण होता है मूलत: भारत भी धार्मिक सांस्कृतिक गौरव वाला एक भूमंडल का विशाल राष्ट्र है। इसी तारतम्य में राम मंदिर निर्माण और स्वाभिमान के पहलुओं पर दृष्टि करना उचित और समीचीन होगा।

-रामंदिर का निर्माण भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत के पुननिर्माण होना लाखों भारतीयों के लिए धार्मिक, विरासत के पुनर्निर्माण के रूप में देखा जाना जाता है।

-सदियों से चले आ रहे संघर्ष एवं बलिदान के बाद मंदिर का निर्माण होना लाखों भारतीयों के लिए धार्मिक सांस्कृतिक आस्था की विजय है और उसके बलिदान का फल है।

-मंदिर के पुर्ननिर्माण से भारतीयों में आत्म विश्वास उत्साह का सृजन हुआ है।

-राम मंदिर के साथ अयोध्या भी आधुनिक विश्वस्तरीय आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विकसित हो रही है।

-सुप्रीम कोर्ट के फैसले का सभी राजनैतिक दलों समुदायों द्वारा सम्मान किया गया जिससे मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

राम मंदिर हमारी संस्कृतिक, हमारी आस्था, भारतीयत्व, राष्ट्रीयत्व समाज शक्ति की सतत यात्रा का प्रतीक है। यह सनातन समाज का संकल्प संघर्ष और जीजीविषा का परिणाम है।

राम मंदिर निर्माण करोड़ों भारतीय सनातनियों का महज सपना नहीं था यह राष्ट्र की संकल्पना संघर्ष दैवीय प्रेरणा का परिणाम था, मंदिर निर्माण की भूमिका में नींव का स्तम्भ बने आंदोलन की भूमिका इतिहास पर दृष्टि डालना उचित एवं समीचीन होगा।

अयोध्या राम मंदिर आंदोलन का इतिहास 16 वीं (सोलहवी) सदी से प्रारम्भ माना जाता है जब बाबर ने राम मंदिर तोड़कर मस्जिद बनवाई थी। 18 वीं शताब्दी में हिंदुओं ने उस स्थान पर फिर से अपना दावा करना आरम्भ किया जिसके बाद कानूनी लड़ाईया शुरू हुई यह आंदोलन 1980 के दशक में राजनीतिक रूप ते तेज हुआ जिसमें विश्वहिंदू परिषद और भाजपा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, 06 दिस. 1992 को हजारों कार सेवकों ने कथित बाबरी ढांचा को गिरा दिया इसके बाद वर्षों कानूनी प्रक्रिया चली और अंतत: 09 नवम्बर 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने विवादित जमीन पर राम मंदिर बनाने का फैसला सुनाया 22 जनवरी 2024 को राम मंदिर का उद्घाटन और प्राण प्रतिष्ठा समारोह आयोजित किया गया।

राम मंदिर निर्माण की पृष्ठ भूमि पर अनेक घटनाएँ और तिथियाँ महत्वपूर्ण है-

-1528 में मुगल शासक बाबर के आदेश पर मीरबाकी ने बाबरी मस्जिद का निर्माण किया।

-1853 पहली बार हिंदुओं ने राम जन्म भूमि पर अपना दावा पेश किया।

-1858 पहली बार हवन और पूजन को लेकर एफ.आई. आर. दर्ज हुई।

–1885 अंग्रेजों के शासन काल में पहली बार अदालत में पहुँचा।

–22 दिस. 1949 विवादित मस्जिद के मुख्य गुंबद के नीचे भगवान राम की मूर्तिया पाई गई।

–16 जन. 1950 को हिंदू महासभा के सदस्य गोपाल सिंह विशारद ने पहला मुकदमा दायर किया।

–1984 राम जन्म भूमि मुक्ति संकल्प के साथ नया आंदोलन शुरु हुआ जिसका नेतृत्व विहिप, भाजपा एवं संघ ने किया।

–1 फरवरी 1986 फैजाबाद की जिला अदालत ने विवादित स्थल का ताला खोलने का आदेश दिया।

–6 दिस. 1992 हजारों कार सेवकों ने विवादित ढांचे को गिरा दिया।

–9 नवं. 2019 सुप्रीम कोर्ट ने राम जन्मभूमि की जमीन पर राम मंदिर बनाने का फैसला सुनाया।

–5 अगस्त 2020 राम मंदिर निर्माण के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भूमि पूजन किया।

–22 जन. 2024 को प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने श्री राम मंदिर का उद्घाटन और प्राण प्रतिष्ठा की।

500 वर्षों के अथक प्रयास और बलिदान के बाद प्रभु श्रीराम जी का मंदिर बनकर तैयार हुआ।

इस मंदिर को बनने के लिए अनगिनत लोगों ने अपना बलिदान दिया और अनेकानेक संघर्ष करना पड़ा।

7 वीं सदी के बाद भारत पर आक्रांताओं का आक्रमण बढ़ गया आक्रमण कारियों ने काशी मथुरा के साथ अयोध्या में भी लूट पाट की और पुजारियों की हत्या कर मूर्तियां तोड़ने का क्रम जारी रखा। 14 वीं शताब्दी तक वे अयोध्या में राम मंदिर को तोड़ने में सफल नहीं हो पाये अयोध्या की रक्षा करने के लिए आसपास के राजा मदद भेज देते थे। हजारों साधुओं ने भी मंदिर रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। 14 वीं शताब्दी में भारत पर मुगलों का अधिकार हो गया और अयोध्या राम मंदिर को नष्ट करने के लिए कई अभियान चलाते हुए 1527–28 में मंदिर तोड़कर बाबरी ढांचा का निर्माण बाबर के सेनापति द्वारा किया गया 1,74000 हिंदुओं ने अपने प्राणों की आहूति दी।22–23 दिसम्बर 1949 की रात को (कथित) बाबरी मस्जिद के अंदर राम और सीता की मूर्तिया स्थापित की गई 1950 राज्य ने CRPC की धारा 145 के तहत उस स्थान पर नियंत्रण कर लिया और हिन्दुओं को पूजा करने की अनुमति दी।

1980 के दशक में हिन्दू राष्ट्रवादी परिवार विश्व हिंदु परिषद हिन्दुओं के लिए इस स्थान को प्राप्त करने राम लला को समर्पित एक मंदिर बनाने के लिए नया आंदोलन प्रारम्भ कर रामनाम लिखी इंर्ट शिलायें और जन जन से धन संग्रह करना प्रारम्भ कर दिया तत्कालिन केन्द्र और राज्य सरकारें शिलान्यास के लिए आगे बढ़ने की अनुमति दी। 09 नवंबर 1989 की आधारशिला रखी गई।

06दिस 1992 को कार सेवकों ने इस स्थल पर रैली का आयोजन किया रैली के शामिल कार सेवकों न विवादित ढांचे को ढ़हा दिया। ढांचे के विध्वंस के परिणाम स्वरूप दो समुदायों में वैमनस्यता का दृश्य पैदा हो गया। बंगालदेश पाकिस्तान पर हिन्दुओं पर आक्रमण अत्याचार उनके प्रार्थना केन्द्र पूजा स्थलों पर हमले किये गये।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की खुदाई से स्पष्ट मंदिर के प्रमाण अवशेष प्राप्त हुए।

श्री राम मंदिर अपने भीतर अनेक आंदोलन सत् और लम्बा इतिहास अपने अतीत में समेटे हुए है। लम्बी न्यायलयीन कार्यवाही भी बहुत दिलचस्प अविस्मरणीय प्रेरक और भावनात्मक विस्मयकारी आश्चर्य चकित कर देने वाला रहा है।

वेदपुराण धर्म संस्कृति भारत की आत्मा है भारत की धर्म प्राण जनता इसी आस्था स्वाभिमान अस्मिता के लिए जीता और मरता है।

मंदिर निर्माण से राष्ट्र चेतना का पुण्य अभ्युदय हुआ। मंदिर के आसपास मानव हिन्दु सभ्यताएं पुष्पित पल्लवित हो रही है। मंदिर केवल पूजा या प्रार्थना स्थल नहीं है समाज जीवन को भी प्रभावित कर राष्ट्र निर्माण व्यक्ति निर्माण केन्द्र है।

⊙⊙

हमारे युवा भ्रमित क्यों?

किसी भी राष्ट्र को आगे बढ़ाने में उसके युवाओं का विशेष स्थान होता है। वे ही विभिन्न दिशाओं में उसकी बागडोर सँभाल अपनी प्रतिभा का परिचय देते हैं। यदि वे ही जाग्रत नहीं होंगे तो भविष्य का उज्ज्वल पथ कैसे प्रशस्त किया जा सकता है? भारत का दुर्भाग्य यह है कि हमने अपने मूल को नहीं पहचाना। जिस ब्रह्मविद्या से कभी हम समूचे विश्व का प्रतिनिधित्व करने में समर्थ हुए थे, वह आज लुप्त हो गई है। हम उसे उजागर नहीं करते; क्योंकि हम उन विषयों में व्यस्त हैं, जिनसे हमारा भौतिक प्रयोजन तो पूरा होता है, परंतु हमारी आत्मा बेचैन ही बनी रहती है।

जिस शक्ति की हमें आवश्यकता है, जो हमारे सोए अंत:करणों को जगाए, जिसके द्वारा समस्त कठिनाइयाँ दूर हो सकें, हमारा समाज * विषमता से उबर सके वह एक ही है। हमारी आत्मा में वह उच्च संस्कार विद्यमान हैं, जिनके द्वारा मनुष्य अपने भाग्योदय की प्राप्ति करता है। यदि हम एकजुट हो भारत के यशोगान को तत्पर हो उठें, अपनी संकीर्णता त्याग दें तथा महानता का वरण करें तो निश्चित ही हम वह कर सकेंगे, जिसके लिए हमारा आवाहन हुआ है।

भारत सदियों से एक ही संदेश देता आया है कि अपनी आत्मोन्नति तथा इस संसार का कल्याण हो हमारा ध्येय होना चाहिए। हम इससे पीछे न हटें, जो भी ही अपने आदर्श की पूर्ति हेतु जुट पड़ें। यह बात ध्यान रखने योग्य है कि यह विशिष्ट समय है। इसमें हमारी आहुति एक सृजनशिल्पी के रूप में होनी चाहिए। युवा मन जागरूक हो, वह बिना भटके अपनी गौरव-गरिमा का स्मरण बनाए रखे तथा उन महा महापुरुषों पर दृष्टि डाले, जिन्होंने तन-मन प्राण, उत्सर्ग की दिशा में लगा दिए।

हम क्यों भूल जाते हैं कि हम गुलाम रहे हैं.. कभी हमने वे दुर्दिन भी देखे हैं, जब कोई हमारी सुनने वाला नहीं था। आज हम अपनी सुख-सुसज्जा की चिंता मात्र करते हैं, पर क्या बलिदानों का अमृत यों ही दरकिनार कर देने योग्य है? क्या अपनी अस्मिता के लिए लड़ मरने का संकल्प हममें नहीं होना चाहिए ?

भारत वह है, जो सदा से प्रकाश का वाहक रहा है, फिर क्यों उसे विषमता के गर्त में जा गिरना था। वह उठ खड़ा हो, जिन भी मतभावों में उसने स्वयं को जकड़ लिया है, प्रचलन की अँधेरी खाई में, विश्वास की कमी से अभिशप्त- उसकी यह दयनीय दशा स्वीकारी नहीं जा सकती है। जो भी अपने को युवा कहते हों उस तेज प्रताप को उजागर करें, जिसके बल पर पुन: भारत अपनी विरासत की ओर बढ़ चले। जीवन की यह स्थिति ऊहा-पोह भरी है तथा इसमें हानि होने के अवसर बने रहते हैं। हमारा स्वाभिमान यदि ऊँचा नहीं है तो हम परिस्थितियों से डिग जाएँगे, परंतु यदि हमारे हृदय में उस ईश्वर के प्रति अनुग्रह का भाव है तो हमारी विजय होकर रहेगी।

प्रत्येक युवा उत्कर्ष का प्रार्थी बने, क्षमताओं को गति देना सौखे तथा वह कर गुजरे जो कि भीतर की पुकार है। इस हेतु मार्गदर्शन हमें मिलता ही रहेगा, असंख्यों नर-रत्नों से विभूषित हमारा इतिहास कहता है कि हमारे युवा साधारण नहीं हैं, बल्कि उस परंपरा के अंग हैं, जिसमें त्याग. तपस्या और लोक आराधना के स्वर उमगा करते हैं।

संकलित

अखण्ड ज्योति से साभार

⊙⊙

अनुशासन की महिमा एवं इसका स्वरूप

अनुशासन कहते हैं अपने आप को अपनी उच्च प्रेरणा को समर्पित कर देना एवं पूरी तत्परता के साथ अपनी प्रत्येक गतिविधि का निरीक्षण कर आगे बढ़ते चलना। जो छोटी से छोटी चीज है, जिस पर नियंत्रण किया जाना है, उसकी ही क्रिया को अनुशासन कहते हैं यानी कि अनु का शासन, इस प्रकार हमारा जीवन स्व-नियंत्रित होता है एवं उसे विकास का अवसर भी क्षण प्रतिक्षण मिलता जाता है।

अनुशासन है विवेकपूर्वक अपने जीवन को सुचारु रूप से गतिशील करना, अपनी आत्मा में छिपे दिव्य वैभव को उचित कार्यों एवं उद्देश्यनिष्ठ कर्तव्यों को समर्पित करना, आगे बढ़ना एवं बिना किसी व्यवधान के जीवन को सुमंगल की दिशा में ले चलना।

अनुशासन हमारे जीवन का परम सखा है, इसकी उत्पत्ति होती है स्वयं को जानकर एवं स्वयं की प्रतिभा को सही दिशा में अग्रसर करने से। अनुशासनहीन व्यक्ति कुछ भी कर ले, उसे जीवन में सफलता एवं उन्नति कभी प्राप्त नहीं हो सकते हैं- क्योंकि उसका विचार-तंत्र ही ठीक नहीं है, वह जो कुछ भी करता है अनमने भाव से, बिना एकाग्रता का संपूर्ण उपयोग किए, बिना समय-विभाजन एवं गुणवत्तापूर्ण कार्यपद्धति के।

हमारे जीवन के सभी कार्य तभी सफल हो सकते हैं, जब हम नियमपूर्वक उन्हें करें, उनके मध्य उपस्थित होने वाली बाधाओं को सहर्ष स्वीकार करें तथा जीवन को अपनी आदर्श कल्पना अनुसार सुगठित होने दें। यही महानता का राजमार्ग है एवं इसके लिए श्रम इतना करना पड़ता है कि अपनी मन:स्थिति को कभी गिरने न दें, स्वयं को जागरूक रखकर एकनिष्ठ होने का प्रयास करें।

हमारा जीवन अनुशासनरूपी श्रेष्ठ कार्यपद्धति से सँवरेगा। हम स्वयं को समझें एवं स्वयं के विकारग्रस्त होने से बचें। अंतत: अनुशासन हमारी आत्मा को ऊँचाई पर पहुँचाने के लिए ही होता है। जब हम इसे सीख जाएँगे भी कोई भी द्वंद्व, कष्ट कठिनाई तथा मन का अस्त-व्यस्त रहना हमें परेशान नहीं कर पाएगा।

जिसे अनुशासन की समझ है, उसका जीवन स्वत: ही किसी महान आदर्श के परिपालन में जा लगता है। वह कुछ भी करेगा वह अपनी अंत:प्रेरणा से, औरों के उकसावे से नहीं स्वयं की आत्मदृष्टि से एवं स्वयं के उज्ज्वल विकास-पथ की दिशा में। अनुशासन अपनी शक्तियों को एकत्रित कर, उन्हें सुगठित बना महान एवं आश्चर्यजनक नीति-व्यवहार का पोषक है।

अनुशासन हमारे जीवन की मूल संपदा है, इसका उचित उपयोग कर हम क्या नहीं कर सकते हैं। हमें आदत डालनी होगी अनुशासित रहने की. इसमें कोई समस्या नहीं, बल्कि समस्या तब है, जब हम कोई भी कार्य अनुशासनविहीन करते हैं। तब व्यर्थ के क्रियाकलाप एवं असंगत नीति स्वत: ही हम पर सवार हो जाते हैं। हम पागलों की तरह इधर-उधर भटककर मात्र अपनी उर्जा का नाश करते हैं, इसलिए अनिवार्य रूप से अनुशासन का जीवन के पग-पग पर पालन करना चाहिए, इसके - गतिरेक से बचना चाहिए तथा अपने जीवन को - महान एवं सौंदर्यपूर्ण बनाने की दिशा में बढ़ चलना चाहिए। यही अनुशासन का जीवन मंत्र है।

संकलित

अखण्ड ज्योति से साभार

⊙⊙

संजीवनी

- **संजीव ठाकुर**
रायपुर छत्तीसगढ़, 9009 415 415

माँ स्नेहिल हाथों का स्पर्श,
माँ साँझ की हल्की धूप,
छाया में बसा सुकून।
हवा में घुली महक,
नन्हों की किलकारी,चहक।

माँ बरसते आँसुओं में मुस्कान,
तमस में उजियारा दीपक।
सपनों की रौशनी की चमक,
डगमगाते कदमों का सहारा।

माँ स्नेहिल हाथों का स्पर्श,
अश्रु में भी मीठा संगीत।
अनकहे शब्दों में लाड़- दुलार,
हर दर्द में हौले-हौले सा प्यार।

माँ नन्हे कदम, तोतले बोल की साक्षी,
हर चोट में बनी ढाल
रातों की तन्हाई में प्रार्थना,
दिन के सूरज में घनी छांव ।

माँ छोटे-छोटे जख्मों का मरहम,
बड़े सपनों की उड़ान की पंख।
जीवन की पहली धुन,
स्वप्न की दिग्दर्शक।

माँ सुरभित हवा बहती नदी,
सब कुछ तेरी ममता का हिस्सा।
तुम्हारे बिना ये संसार अधूरा,
तुम्हारे साथ हर पल पूरा।

माँ अधूरी किताब में तेरा पन्ना,
अनकहे गीत में तेरी धुन।
हर मुस्कान में तेरी चमक,
हर आँसू में तेरी ममता।

माँ बिना शब्दों शब्दावली,
बिन देखे समझने वाली।
जीवन के हर रंग में रंगी,
हर दर्द में छुपी उजली रौशनी।

माँ सुबह रोशनी की उजली किरण,
अंतिम रात का दीपक।
तेरे बिना न कोई रास्ता,
तेरे बिना न सब कुछ पूरा।
तेरे बिना तो जीवन अधूरा।

⊙⊙

अब तो जागो (आल्हा छंद)

डॉ. दीनदयाल यादव
बिलासपुर

जागो-जागो हिन्दू भाई,
अब ना तनिक करो आराम।
धूल चटाकर कायरता को,
कर दो इनका काम तमाम।।

निर्दोषों पर चली गोलियाँ,
गूंज उठी बहनों की चीख।
क्रूरता ने भी सीमा लांघी,
दया नही प्राणों की भीख।।
कर दी छलनी एक मिनट में,
केवल पूछा उनका नाम।
जागो-जागो हिन्दू भाई,
अब ना तनिक करो आराम।।

धधक रहा अब हिन्द हमारा,
नयनों से होती बरसात।
बिना निवाला शांत क्षुधा है,

नींद नहीं आती है रात।
मानवता के बने पुजारी,
जिनका मिला यही परिणाम।।
जागो-जागो हिन्दू भाई,
अब ना तनिक करो आराम।।

लाल हो गई प्यारी धरती,
करके दौड़ों आँखें लाल।
साहस सम्बल धार हृदय में,
ध्वस्त करो रिपुओं की चाल।।
थर-थर काँपे अब ना झाँके,
देना ऐसा है अंजाम।।
जागो-जागो हिन्दू भाई,
अब ना तनिक करो आराम।। ⊙⊙

सब कहाँ जा रहे हैं

डॉ. दीनदयाल यादव
बिलासपुर

सब जहाँ जा रहे हैं।
स्वयं नहीं बता पा रहे हैं।।
अवनि से अम्बर तक,
ऊँची उड़ान है।
हरेक उड़ान में,
भरा अभिमान है।।
भूलकर दस्तूर सृष्टि का,
मनमौजी जीना चाह रहे हैं।
सब कहाँ जा रहे हैं,
स्वयं नही बता पा रहे हैं।।
विकास की परिभाषा में,
विनाश का अंकुर है।
इसी से बढ़ा हुआ,
सबका अपना गुरुर है।।
मन सशंकित है,
अहंकारों के टकराने से,
विनाश की ज्वाला न भड़क जाये।
पर इन लोगों को भला,
कौन समझाये।
अपनी ढफली में,
कुछ का कुछ गा रहे हैं।
सब कहाँ जा रहे हैं,
स्वयं नहीं बता पा रहे हैं।
मुट्ठी में बम रखकर,
धमकियों की बौछार।
विस्मृत कर रहे,
मानवता आधार।
फूट डालने की रीति,
हो रही है ताजी।
अपने को बड़ा मनाने,
चाहत सबको राजी।।
दबाकर दूसरों को,
परचम लहराना चाह रहे हैं।
सब कहाँ जा रहे हैं।
स्वयं नही बता पा रहे हैं।। ⊙⊙

समाचार

केशकाल – केशकाल विकासखंड के सरस्वती शिशु मंदिर, धनौरा की छात्रा कुमारी विशाखा यादव ने भोपाल में आयोजित 36वीं राष्ट्रीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में 200 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त कर छत्तीसगढ़ राज्य और पूरे जिले को गौरवान्वित् किया है। कुमारी विशाखा ने अपनी लगन, मेहनत और अदम्य उत्साह से यह उपलब्धि हासिल की है। वे केशकाल अंचल की पहली बेटी है जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर की एथलेटिक्स प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव हासिल किया है।

सुरज मंडावी कांकेर– सरस्वती शिशु मदिर उच्यतर माध्यमिक विद्यालय गढ़पिछवाड़ी कांकेर में तीन दिवसीय विभाग स्तरीय खेल समारोह का भव्य समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विधायक आशाराम नेताम उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला पंचायत अध्यक्ष किरण नरेटी ने की। यहीं विशेष अतिथि के रूप में कलेक्टर नीलेश कुमार महादेव क्षीरसागर, जिला पंचायत सीईओ हरीश मडावी, नगर पालिका अध्यक्ष अरुण कौशिक, कांकेर शिक्षा समिति के पूर्व अध्यक्ष एल. सी. लालवानी, वर्तमान अध्यक्ष भरत मटियारा एवं व्यवस्थापक अशोक राठी मंचासीन रहे।

दीप प्रज्वलन व स्वागत समारोह से हुई शुरुआत

अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तत्पश्चात विभाग समन्वयक संगम लाल पांडे ने खेल समारोह की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि सरस्वती शिशु मंदिर देशभर में शिक्षा, नैतिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक गतिविधियों पर विशेष जोर देता है। देशभर में लगभग पैंतीस लाख से अधिक विद्यार्थी इस विद्यालय से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और दो लाख आचार्य इस कार्य में समर्पित भाव से जुटे हैं। कांकेर, कोंडागांव और नारायणपुर जिले से कुल पन्द्रह विद्यालयों के बारह सौ बाइस विद्यार्थियों ने इस खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लिया।

अतिधियों ने खेत की महत्ता बताई

नगर पालिका अध्यक्ष अरुण कौशिक ने कहा कि विद्यालय के बच्चे खेल के माध्यम से अपनी अलग पहचान बना रहे है। खेल जीवन में अनुशासन लाता है।

सीईओ हरीश मंडावी ने अपने विद्यालयीन अनुभव साझा करते हुए कहा कि सरस्वती शिशु मंदिर केवल शिक्षा ही नहीं बल्कि संस्कार और अनुशासन की पाठशाला है। यहां मंत्रों के उच्चारण और परंपराओं के माध्यम से बच्चों में संस्कार विकसित किए जाते हैं। कलेक्टर निलेश कुमार महादेव क्षीरसागर ने विजयी और पराजित दोनों तरह के प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ दी और पराजित का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि हारने वाले भी मेहनत कर भविष्य में जीत का लक्ष्य हासिल कर सकते हैं।

''खेल जीवन का आधार हैं विधायक''

मुख्य अतिथि विधायक आशाराम नेताम ने अपने उद्बोधन में कहा कि खेल हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। उन्होंने कहा कि सरस्वती शिशु मंदिर शिक्षा के साथ श्रेष्ठ संस्कार प्रदान करता है। यहां से शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी राष्ट्र सेवा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आचार्यों का समर्पण भाव प्रेरणादायी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही जिता पंचायत अध्यक्ष किरण नरेटी ने कहा कि सभी बच्चों ने बहुत सुंदर खेल दिखाया। सफल बच्चों को उन्होंने बधाई दी और पीछे रह गए विद्यार्थियों को भविष्य में बेहतर प्रदर्शन करने की शुभकामनाएँ दी।

पुरस्कार वितरण और आभार

विभागीय खेल संयोजक सोमदेव नायक ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में काकेर शिक्षा समिति के उपाध्यक्ष राम शरण जैन, सह सचिव अजय जैन, कोषाध्यक्ष राजगोपाल कोठारी, विद्यालय प्राचार्य कैलाश कुमार तारक सदस्य ललित गांधी, जनपद सदस्य कमलेश उसेंडी,

सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव, शिव सिंह भदौरिया, उत्तम यादव, खेल प्रमुख संत लाल यादव, महेश कौशल सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

अंत में समूह एवं व्यक्तिगत खेलों के विजेताओं को अतिथियों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। समारोह में बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था और वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूज उठा।

राजिम। श्री कुलेश्वरनाथ बाल कल्याण समिति द्वारा संचालित सरस्वती शिशु उच्चतर माध्यमिक विद्यालय राजिम में तीन दिवसीय विभागीय गणित विज्ञान मेला और उसके पश्चात तीन दिवसीय प्रांतीय विज्ञान मेला का सफल आयोजन हुआ 21 सितंबर से शुरू हुए विभागीय गणित और विज्ञान मेला में राजिम विभाग के तीन जिलों गरियाबंद, महासमुंद और धमतरी से भैया-बहन इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सरस्वती शिशु मंदिर राजिम में उपस्थित हुए थे। गरियाबंद जिले से 94 भैय्या और 69 बहन महासमुंद जिले से 75 भैया और 53 बहन, धमतरी जिले से 33 भैया और 23 बहनों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। 28 आचार्य संरक्षक के तौर पर उपस्थित रहे। 21 सितंबर को इस कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर राजिम विधानसभा के विधायक माननीय श्री रोहित साहू जी, राजिम नगर पंचायत के अध्यक्ष श्री महेश यादव जी और समस्त पार्षद गण कार्यक्रम में उपस्थित रहे विशिष्ट अतिथि के तौर पर कुलेश्वर नाथ बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष श्री राघोबा महाडिक जी, सचिव अजय साहू जी, कोषाध्यक्ष रामकुमार गोस्वामी जी, सदस्य कालूराम ध्रुव एवं शिव कुमार ठाकुर उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र में माननीय विधायक जी ने सभी भैया-बहनों को शुभकामनाएं देते हुए प्रोत्साहित किया साथ ही उनके इस कार्यक्रम के लिए बधाई दी। उक्त कार्यक्रम में निर्णायक के तौर पर विभिन्न शासकीय और अशासकीय विद्यालयों तथा महाविद्यालयों से शिक्षक गण उपस्थित रहे हैं। उक्त कार्यक्रम का समापन 23 सितंबर को हुआ साथ ही 23 सितंबर को प्रांतीय विज्ञान मेला का उद्घाटन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर राजिम तहसील के तहसीलदार माननीय श्री मयंक अग्रवाल जी एवं सरस्वती शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष राम भरोसा सोनी जी विशिष्ट अतिथि । के तौर पर उपस्थित रहे कुलेश्वर नाथ बाल कल्याण समिति के समस्त सदस्य गण भी उपस्थित रहे। उक्त कार्यक्रम में 9 विभागों से 156 भैय्या और 111 बहन 43 संरक्षक आचार्य उपस्थित रहे। विद्यालय परिवार ने पूरे नगर को उक्त कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित किया था उक्त कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए विद्यालय परिवार एवं समिति कार्यक्रम में उपस्थित समस्त अतिथियों एवं निर्णायकों का हृदय से आभार व्यक्त किया है। संपूर्ण जानकारी विद्यालय के प्रचार प्रसार प्रमुख द्वारा दी गई।

कोरबा -विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की योजना से कोरबा विभाग के सरस्वती शिशु मंदिरों के छात्रों की खेल प्रतिभा को निखारने विभाग स्तरीय खेलकूद समारोह एचटीपीपी दर्दी में शुरू हुआ। शुभारंभ मौके पर समारोह के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत मंडल दर्री के अधीक्षण यंत्री अजय सिंह कोरम व अध्यक्षता सरस्वती शिशु मंदिर दर्री के अध्यक्ष धनंजय सिंह ने की।

छात्रों ने सरस्वती वंदना की प्रस्तुति दी। दीपक सोनी ने अतिथियों का परिचय कराया। नवल किशोर शुक्ला व सुषमा बारस्कर ने अतिथियों का स्वागत किया। सोनी विभाग स्तरीय खेलकूद की तय रूपरेखा की जानकारी दी। संस्थान ने प्रतिनिधि व वनांचल शिक्षा सेवा न्यास के प्रांत प्रमुख नरेश जायसवाल ने कहा कि विद्या भारती में 5 आधारभूत विषयों को जोड़ा गया है। शारीरिक शिक्षा, योग शिक्षा, संगीत शिक्षा, संस्कृत शिक्षा और नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा से छात्रों का सर्वांगीण विकास हो रहा है। खेलकूद में बाल वर्ग, किशोर वर्ग व तरुण वर्ग में 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर, 600 मीटर, 800 मीटर, 1 हजार, 1500 व 3 हजार मीटर दौड़, त्रिकूद, ऊंची कूद, लंबी कूद, गोला फेंक, तवा फेंक, भाला फेंक, हेमर थो फेंक, बाधा

दौड़ रिले रेस खेल में छात्र-छात्राएं प्रतिभा दिखाएंगे। कोरबा समेत जांजगीर-चांपा, सक्ती जिले के 21 स्कूलों के

245 छात्र-छात्राएं व आचार्य खेलकूद समारोह का हिस्सा बनेंगे। इस मौके पर संस्थान के जिला प्रतिनिधि अर्जुन सिंह पटेल, कोरबा विभाग समन्वयक दीपक सोनी, सरस्वती शिशु मंदिर दर्री के संयोजक भीष्मदेव सिंह, खेल प्रभारी व सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल कुसमुंडा के प्राचार्य डॉ. मंजुला साहू, मालती जोशी, नवल किशोर शुक्ला मौजूद रहे।

आरंग -मोरध्वज की नगरी आरंग की सबसे पिछड़े बस्ती रविदास नगर में संचालित सरस्वती संस्कार केंद्र में विद्या भारती के राष्ट्रीय मंत्री र शिवप्रसाद का आगमन हुआ। राष्ट्रीय मंत्री ने सर्वप्रथम न संत रविदास के श्री चरणों में माथा टेककर नगर के खुशहाल जीवन की कामना की। उसके बाद मंगल भवन में संस्कार केंद्र के बच्चों और उनके अभिभावकों से चर्चा की।

उन्होंने कहा कि विद्या भारती का काम समाज के अंतिम छोर में बसे मां भारती के उन सपूतों की ओर है। जो किसी कारणवश विकास के दौड़ में पीछे रह गए हैं उनके बच्चों को भी अच्छी शिक्षा और संस्कार मिले. हम संस्कार केंद्र के माध्यम से यही प्रयास कर रहे हैं।

उन्होंने कहा शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं है। सही शिक्षा वही है जो ज्ञान के साथ जीवन मूल्य, चरित्र, शिष्टाचार और संस्कार प्रदान करें। संस्कार केंद्र इसी उद्देश्य से निशुल्क प्रारंभ किए गए हैं। यहां केवल बच्चों को पढ़ाया नहीं जाता सत्य,अहिंसा, अनुशासन, सम्मान सहयोग देश प्रेम एवं नैतिकता के संस्कार भी दिए जाते हैं। आरंग नगर पालिका अध्यक्ष डॉ संदीप जैन ने कहा कि डॉ महेश चंद्र जैन की पावन स्मृति में चलने वाले यह संस्कार केंद्र बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कारों को जोड़ते हुए उनके सर्वांगीण विकास का कार्य कर रहे हैं। गतिविधि, खेल आधारित शिक्षा बच्चों को मनोरंजक बनाते हुए आनंद मय वातावरण में बच्चों को शिक्षा मिले यह मेरा प्रयास है। कार्यक्रम में सरस्वती शिक्षा संस्थान के सह प्रांत प्रमुख रामकुमार वर्मा, संस्कार केंद्र प्रांत प्रमुख चंद्रकुमार डडसेना, विभाग समन्वयक मानिक राम साहू, जिला संघचालक देवेंद्र सिंह ठाकुर, सरस्वती शिशु मंदिर के अध्यक्ष चंद्रशेखर साहू, उपाध्यक्ष विनोद गुप्ता, व्यवस्थापक राजेश साहू, कोषध्यक्ष गणेश साहू डॉ तेजराम जलक्षत्री, कौशल चंद्राकर सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन बहन सुषमा तिवारी तथा हिना चंद्राकर और आभार प्रदर्शन भैया राजेश साहू ने किया।

बलौदाबाजार-अमर स्तम्भ जिले के बलौदाबाजार नगर शहर में आज ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन उप्लब्धयों से अवगत कराते हुए उनमें क्रिया आधारित अध्ययन, अवलोकन अन्वेषण एवं संश्लेषण प्रवृत्ति का विकास करने एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष विज्ञान एवं गणित मेला का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष विभाग स्तरीय आयोजन नवापारा राजिम में आयोजित किया गया। जिसमें स्थानीय सरस्वती शिशु मंदिर बलौदा बाजार में 31 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। बाल वर्ग प्रश्न मंच प्रतियोगिता में भैया पवन चौमर, भूमिका वर्मा एवं रोहिणी वर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार बाल वर्ग में जल प्रबंधन पर आधारित माडल में आदित्य कुमार साहू, सौर ऊर्जा संरक्षण पर आधारित मॉडल में प्रवीण चेलक नवाचारी पर यश बंजारे द्वितीय स्थान प्राप्त किया। किशोर वर्ग प्रश्न मंच में पुष्पेंद्र खुटि, निखिल सोनवानी एवं हेमा बंजारे ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

वायु प्रदूषण पर नियंत्रण पर आधारित मॉडल रणवीर माहू प्रथम स्थान प्राप्त किया शिशु वर्ग कृषि पर आधारित मॉडल में उपेंद्र कुमार बंजारे ने प्रथम स्थान एवं नवाचारी में हरिशंकर जायसवाल द्वितीय स्थान प्राप्त किया विज्ञान पत्र वाचन शिशु वर्ग में बहन रेणु निषाद ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। शिशु वर्ग वैदिक गणित प्रश्न मंच में दिनेश वर्मा दौमि लसत चेतन दास मानिकपुरी द्वितीय स्थान, गणित मॉडल संक्रिया आधारित में मीनाक्षी साहू द्वितीय, ज्यामिति आधारित मॉडल में अनामिका साहू द्वितीय एवं नवाचारों में अंकित वर्मा प्रथम स्थान प्राप्त किया। तथा गणित प्रयोग में पलक डहरिया तृतीय स्थान एवं किशोर वर्ग भूमिका बंजारे पाइथागोरस प्रमेय सिद्धांत पर आधारित मॉडल में द्वितीय स्थान गणित पत्र वाचन में आरती वर्मा तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय के प्राचार्य त्रिलोचन

साहू संचालन समिति के अध्यक्ष विजय के केसरवानी, उपाध्यक्ष खोड्स राम कश्यप, सचिव राज नारायण केसरवानी, सहसबिय श्रीमती नीलम सोनी ने विजेता छात्र-छात्राओं को अपनी शुभकामनाएं दी। विज्ञान प्रमुख श्रीमतो निर्मला वर्मा, विज्ञान सहायक श्रीमती अनूपा चंद्राकर एवं गणित प्रमुख श्रीमती गायत्री वर्मा के मार्गदर्शन में शिक्षकों ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

बिलासपुर - शनिवार को सरस्वती महाविद्यालय कोनी के नए भवन का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, उपमुख्यमंत्री अरुण साव, केंद्रीय मंत्री तोखन साहू, उच्च शिक्षा मंत्री टंक राम: वर्मा, स्कूल शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव, छग पाठ्यपुस्तक निगम आयोग के अध्यक्ष राजा पांडे और विल्हा विधानसभा के विधायक धरमलाल कौशिक उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री ने नए भवन का निरीक्षणकिया और महाविद्यालय को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नई दिशा देने की शुभकामनाएं दीं।

कार्यक्रम महाविद्यालय के अध्यक्ष बृजेंद्र शुक्ला, सचिव संतोष तिवारी, सदस्य सुजीत मिश्रा, सुरेंद्र गुंबर और प्राचार्य डॉ सोमेंद्र ब्रह्मा की देखरेख में हुआ। इस दौरान महाविद्यालय के प्राध्यापक अक्षत तिवारी, अजय तिवारी, हिमांशु यादव, पुष्पेंद्र श्रीवास, नीतू साहू, दीक्षा यादव सहित अन्य शिक्षक उपस्थित रहे।

आंवला पूजन मनाया गया

पलारी -सरस्वती शिशु मंदिर पलारी में ऑवला नवमी के उपलक्ष्य में शिशु कक्षा के भैय्या बहन को प्रकृति पूजन के विषय को लेकर आंवला पूजन किया गया। पूजन के समय बच्चों के द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। विद्यालय के प्राचार्य एवं आचार्य दीदीयों ने पूजन कर बच्चों के आरोग्य और समृद्धि की कामना किए।

अकलतरा -दिनांक 26.9.2025 दिन शुक्रवार को सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अकलतरा

में सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर की योजना से आयोजित प्रांतीय गणित मेला का उद्घाटन श्रीमान सुमीत बघेल जी उप अनुविभागीय अधिकारी अकलतरा,बलौदा,पूर्व छात्र के मुख्य आतिथ्य, प्रो जय कुमार जैन जी सेवा निवृत प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय अकलतरा,पूर्व रजिस्ट्रार पंडित सुंदरलाल शर्मा विश्वविद्यालय बस्तर की अध्यक्षता,श्रीमान देवेंद्र राव देशमुख अखिल भारतीय वैदिक गणित प्रमुख,श्रीमान गोविंद चौधरी प्राचार्य राजिम,वैदिक गणित प्रमुख विद्या भारती मध्य क्षेत्र, छत्तीसगढ़ के विशिष्ट अतिथि ,श्री बिहारी लाल ताम्रकार संयोजक प्रांतीय गणित मेला,श्री ओमप्रकाश साहू जी कोषाध्यक्ष,श्री गोपेश तुलस्यान सह विभाग प्रमुख कोरबा,श्री विजय केडिया अध्यक्ष चैंबर ऑफ कॉमर्स अकलतरा,श्री अभिषेक केडिया अध्यक्ष पूर्व छात्र परिषद अकलतरा,श्री अयन जैन पूर्व छात्र ,श्री देवभूषण सिंह जी उपाध्यक्ष ग्राम भारती जिला जांजगीर की उपस्थित में संपन्न हुआ। स्वागत भाषण संयोजक श्री बिहारी लाल ताम्रकार जी ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की प्रस्तावना वैदिक गणित प्रांत प्रमुख श्रीमान गोविंद चौधरी जी ने रखा। श्रीमान देवेंद्र राव देशमुख जी ने गणित की उज्ज्वल परम्परा पर विस्तार से जानकारी दिए। मुख्य अतिथि श्रीमान सुमीत बघेल जी ने बहुत सुंदर ढंग से जीवन में लक्ष्य बनाना क्यों आवश्यक है उदाहरण सहित भैया बहनों को समझाए। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो जय कुमार जैन जी ने सरस्वती शिशु मंदिर के छात्र बोर्ड परीक्षाओं में,खेलकूद, विज्ञान

प्रश्नमंच,वैदिक गणित प्रश्नमंच में किस प्रकार उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं बतलाए। आभार ज्ञापन श्री गोपेश तुलस्यान जी ने किया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के प्राचार्य श्रीमान केशव कुमार कौशिक ने किया। यह अपनी भारत माता,संपूर्ण विश्व की माता गीत विद्यालय की आचार्या सविता कुंभकार ने प्रस्तुत किया। उल्लासमय वातावरण में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के 8 विभाग के 26विद्यालय से 207 प्रतिभागी भैया,बहन, 29 संरक्षक आचार्य बंधु,भगिनी निर्णायक 10 तथा अकलतरा विद्यालय के 55 आचार्य,कर्मचारी बंधु,भगिनी,प्रबंध समिति के 7 पदाधिकारी सदस्य सहभागी हुए।

लुड़ेग –सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय –लुड़ेग ,में आज उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक खंड के अभिभावक बंधु, भगिनी का एक गोष्ठी का आयोजन हुआ

,जिसमें लगभग 200 अभिभावक बंधु भगिनी उपस्थित थे। भैया /बहनों की उपस्थिति, तिमाही परीक्षा की समीक्षा वार्षिक परीक्षा की तैयारी आदि विषयों पर गहन विचार–विमर्श, अभिभावकों की सुझाव का क्रियान्वयन हो ,इस पर चर्चा हुआ, इस अवसर पर विद्यालय के अध्यक्ष, व्यवस्थापक, कोषाध्यक्ष , प्राचार्य सहित सभी स्टाफ उपस्थित रहे, अल्पाहार,चाय पश्चात कार्यक्रम को समापन किया गया।

सशिमं बालोद में विद्यालय गुणवत्ता विकास जिला स्तरीय कार्यशाला का हुआ आयोजन

बालोज –दिनांक 04/11/25 दिन – मंगलवार को सशिमं बालोद में सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ के तत्वाधान में राजनांदगांव विभाग अंतर्गत बालोद जिले के समस्त नगरीय एवं ग्रामीण विद्यालयों में विद्यालय गुणवत्ता विकास कैसे करें इस पर विशेष बैठक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ प्रांत के प्रादेशिक सचिव श्रीमान लक्ष्मण राव मगर जी , सह प्रांत प्रमुख श्री रामकुमार वर्मा जी , राजनांदगांव विभाग समन्वयक श्री दीपक यादव जी, जिला समन्वय ग्राम भारती श्री दीपक हिरवानी के अतिथ्य में संपन्न हुआ। सर्वप्रथम दीपप्रज्जवलन व सरस्वती वंदना किया गया तत्पश्चात स्थानीय विद्यालय के प्राचार्य श्री दीनदयाल साहू जी द्वारा अतिथियो का परिचय कराया गया। सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ प्रांत के प्रादेशिक सचिव श्रीमान लक्ष्मणराव मगर जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ प्रांत की योजनानुसार एवं प्रांतीय प्राचार्य योजना बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार इस वर्ष को गुणवत्ता वर्ष घोषित किया गया है। अत: हम सभी को मिलकर इस वर्ष अपने–अपने विद्यालय को हर दृष्टि से (विशेष कर परीक्षा परिणाम में) श्रेष्ठ बनाना है। इसी बात से अवगत कराते हुए कि हम किन–किन बातों को ध्यान में रखें जिससे हमारा विद्यालय की गुणवत्ता का विकास हो , प्रादेशिक सचिव जी ने बताया कि हमारा मुख्य विषय राष्ट्रवाद का विकास करना है , जैसा कि हम सभी को पता है कि इस वर्ष को गुणवत्ता वर्ष घोषित किया गया है इसको ध्यान में रखते हुए हमें विशेष परीक्षा परिणाम को कैसे शत–प्रतिशत लाए इस पर ध्यान केंद्रित करना है और जब तक हम अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार नहीं करेंगे हमारा परिणाम में बदलाव असंभव है इसके लिए हमें सीखने सिखाने पर अधिक जोर देना है , अगर हम योजना बनाकर शैक्षणिक क्रिया कराए तो निश्चित ही परीक्षा परिणाम में बदलाव देखने को मिलेगा जिससे हमारे विद्यालय की गुणवत्ता का विकास शीघ्र होगा , अपने वक्तव्य में प्रत्येक बच्चों का ग्रेडिंग एवं बच्चों के पलक बनाकर कार्य करने पर जोर दिया, अनेक शैक्षणिक योजनाएं के बारे में भी जानकारी प्रदान कर सभी से इन योजनाओं का सफल क्रियान्वयन करने का आग्रह भी किया गया। कार्यक्रम में बालोद जिला के नगरीय एवं ग्रामीण विद्यालयों से आये प्राचार्य, प्रधानाचार्य, पाली प्रमुख, तीनो विभाग के परीक्षा प्रमुख, एवं उत्कृष्ट विद्यालय टोली ऐसे सभी विद्यालयों से आए आचार्य / दीदियों की

उपस्थिति सराहनी रही।

खो-खो में पाहंदा (अ) की बहनों का दबदबा कायम

पाटन। विधानसभा क्षेत्र के पहंदा (अ) स्थित सरस्वती शिशु मंदिर एवं एकलव्य खो-खो संघ की बहनों ने एक बार फिर मध्य क्षेत्र (स्तस्तद्ध) खो-खो प्रतियोगिता में अपनी श्रेष्ठता

साबित की। लगातार छठे वर्ष टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त कर गाँव का नाम रोशन किया।

इस वर्ष जांजगीर-चांपा में आयोजित मध्य क्षेत्रीय खो-खो प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए पहंदा (अ) की टीम ने पहला स्थान हासिल किया। इसके साथ ही आगामी 8 से 11 नवम्बर तक हापुड़ (उत्तर प्रदेश) में होने वाली अखिल भारतीय प्रतियोगिता के लिए टीम ने अपनी जगह पक्की कर ली है।

टीम की कप्तान कुमकुम देवांगन और उप कप्तान प्राची यादव के नेतृत्व में जाह्नवी यादव, लक्ष्मी साहू, अंकिता साहू, हेमा ठाकुर, नूतन ठाकुर, रितिका ठाकुर, जाह्नवी वर्मा, तान्या ठाकुर और गीतांजलि साहू ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन किया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री चेलाराम साहू ने बताया कि विगत 6 वर्षों से सरस्वती शिशु मंदिर, पहंदा (अ) की टीम लगातार विद्या भारती (स्तस्तद्ध) मध्य क्षेत्र खो-खो प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करती आ रही है।

सरस्वती शिशु मंदिर खरौद में कावड़ यात्रा

सरस्वती शिशु मंदिर के कक्षा अरूण से पंचम तक के भैया /बहनों की कांवर यात्रा बोल बम के जयघोष के साथ विद्यालय परिसर से लक्ष्मणेश्वर मंदिर तक निकाली गई ।इसे लेकर बच्चों में खासा उत्साह देखने को मिला। वही नन्ही मुन्ने बच्चों को कांधे पर कांवर सजाकर लक्ष्मणेश्वर मंदिर जाते देख लोग भी भाव विभोर नजर आए।

भैया बहनों ने लक्ष्मणेश्वर महादेव का बारी बारी से जलाभिषेक किया, एवं बोल बम का जयघोष किया ।मंदिर परिसर में विद्यालय के प्रधानाचार्य सदानंद यादव ने भैया बहनों को भारतीय संस्कृति में धार्मिक आस्था के विशेष महत्व के बारे में बताया, और आने वाली पीढ़ी को सुसंस्कृत बनाए रखने के लिए उन्हें शिक्षा में भारतीय संस्कृति से जुड़ी परंपराओं का ज्ञान दिया जाना अति आवश्यक है ।सावन का महीना भगवान शिव को समर्पित होता है और इसका हिंदू धर्म में बहुत महत्व है ,यह महीना भगवान शिव की पूजा आराधना और अभिषेक के लिए विशेष रूप से माना जाता है सावन के महीने में शिवजी की पूजा करने से सभी मनोकामनाएं पूरी होती है एवं सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है। इस कांवर यात्रा को सफल बनाने में विद्यालय के प्रधानाचार्य सदानंद यादव,नीरा आदित्य, सावित्री साहू,लीना शुक्ला, अनुजा राही, नीलम कश्यप, रीना भारद्वाज, अनुपमा यादव, रामगोविन्द श्रीवास, गेंदराम कश्यप,दीपक आदित्य, पवन आदित्य, शैलेन्द्री सिदार, सीमा भेड़पाल , रमेश भारद्वाज, तेजकुमार साहू आदि उपस्थित रहे।

अर्जुनी के आजाद चौक में शिल्प के देवता विश्वकर्मा जयंती धूमधाम से मनाया

अर्जुनी- ग्राम अर्जुनी में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी शिल्प के देवता भगवान विश्वकर्मा की जयंती धूमधाम से मनाया गया। जगह-जगह प्रतिष्ठान में पूजा अर्चना किया गया। गांव के सहकारी वितरण केंद्र के आजाद चौक में विश्वकर्मा की प्रतिमा को विराजित किया गया जिसे 18 सितंबर

दिन गुरुवार विसर्जित किया जाएगा। शिल्प के देवता भगवान विश्वकर्मा की विधिवत पूजा अर्चना करने में राजमिस्त्री दिनभर लगे रहे। साथ ही प्रसादी वितरण किया गया । रामनारायण साहू अध्यक्ष राज मिस्त्री संघ ग्रामीण ने बताया कि विश्वकर्मा जयंती के दिन का हमे हर वर्ष बेसब्री से इंतजार रहता है भगवान विश्वकर्मा के कृपा से हम जैसे हजारों करो?ी का इनकी कृपा से भरण पोषण होता है ये ही विश्व के सृजनकर्ता है। इस अवसर पर कौशल साहू ,प्रहलाद फेकर ,मधुसूदन वर्मा ,ईश्वर ध्रुव ,दिनेश यादव ,देवनाथ साहु, पवन फेकर, टिकेश्वर ध्रुव, विजय पिंटू साहू ,,उमेश साहू, राजेश ध्रुव ,चुम्मन साहू ,सुदर्शन ध्रुव ,दुर्गेश सोनू वर्मा, मंगलू ध्रुव, कुंवर सिंह यादव ,पीतांबर ,पूरन फेकर धनंजय यादव, दीनू ध्रुव, रघु यादव, समारू रामकुमार घृतलहरे, मुनीम यादव, अरुण यादव ,विक्रम यादव, मनोज साहू, कृष्णा साहू ,जीतराम निषाद, दौलेश्वर यादव, हरिश्चंद्र ध्रुव, सहित राजमिस्त्री एवं ठेकेदार सहित श्रमिक गण उपस्थित थे।

बागबाहरा। प्रांत स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण के अवसर पर सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ प्रांत के संगठन मंत्री डॉ़ देवनारायण साहू ने मुख्य वक्ता की आसंदी से संबोधित करते हुए कहा कि आज हम सब यहाँ एक विशेष क्षण के साक्षी हैं। बीते तीन दिनों तक प्रांत स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का रोमांचक आयोजन हुआ। मैदान पर खिलाड़ियों ने केवल खेल ही नहीं खेला, बल्कि अनुशासन, परिश्रम, टीम भावना और आत्मविश्वास का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किया। कबड्डी हमारे देश का परंपरागत खेल है, जो हमें साहस, धैर्य और सामूहिकता का पाठ पढ़ाता है। इस प्रतियोगिता में सभी

खिलाड़ियों ने जिस जोश और खेल भावना से भाग लिया, वह सराहनीय है। जीतने वाली टीम को हार्दिक बधाई और जो खिलाड़ी विजयी नहीं हो सके, उनसे कहना चाहूँगा दृ हार को कभी अपनी कमजोरी न मानें, बल्कि अगली जीत की तैयारी समझें।

प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में स्थानीय नगर पालिका के पार्षद रूपेशकुमार साहू उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय संचालन समिति के सचिव/व्यवस्थापक राहुल अग्रवाल ने की। विशेष अतिथि के रूप में थाना प्रभारी अजय सिन्हा उपस्थित रहें। अतिथियों ने भैया बहिनों को संबोधित करते हुए कहा कि इस प्रतियोगिता ने हमें यह सिखाया कि सच्चा खिला?ी वही है जो परिश्रम, अनुशासन और आत्मविश्वास के साथ मैदान में उतरता है और परिणाम चाहे जो हो, मुस्कुराकर स्वीकार करता है।

स्थानीय सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित प्रांत स्तरीय तरूण वर्ग कबड्डी की प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। सशिमं. बागबाहरा कबड्डी प्रतिभागी विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित क्षेत्र स्तर (छत्तीसग?, मध्यभारत, महाकौशल एवं मालवा) की प्रतियोगिता दिनांक 10 एवं 14 अक्टूबर 2025 को बनखे?ी गोविन्दनगर

(मध्यप्रदेश) में आयोजित होने वाली प्रतियोगिता में छत्तीसग? प्रांत का नेतृत्व करेंगें।

विदित रहे, उक्त सामूहिक खेलकूद समारोह एवं का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। भारत शासन द्वारा आयोजित खेलकूद प्रतियोगिता में सरस्वती शिशु मंदिर के प्रतिभागियों को एक राज्य के रूप में सम्मिलित किया जाता है। छत्तीसगढ प्रांत स्तर की सामूहिक खेलकूद (कबड्डी) प्रतियोगिता 29 सितंबर से 01 अक्टूबर तक सरस्वती शिशु मंदिर बागबाहरा में आयोजित था, जिसमें सशिमं. बागबाहरा के तरूण वर्ग के प्रतिभागियों ने फाइनल की प्रतियोगिता में रायगढ़ विभाग के प्रतिभागियों को पराजित कर शानदार प्रदर्शन करते हुए तरूण वर्ग की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर क्षेत्रीय प्रतियोगिता के लिए चयनित हुए वहीं तरूण वर्ग बहिन के प्रतिभागियों ने दुर्ग विभाग को पराजित कर शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त कर क्षेत्रीय प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ प्रांत का नेतृत्व करने के लिए चयनित होकर बागबाहरा नगर एवं पूरे छत्तीसगढ़ प्रांत को गौरवान्वित किया।

प्रातीय प्रतियोगिता में चयनित होकर क्षेत्रीय प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ प्रांत का तरूण वर्ग की कबड्डी प्रतियोगिता में नेतृत्व करने के लिए सरस्वती शिक्षा संस्थान के संगठन मंत्री डॉ. देवनारायण साहू, अध्यक्ष रामभरोसा सोनी, प्रादेशिक सचिव लक्ष्मणराव मगर, प्रांतीय खेल प्रमुख दिवाकर स्वर्णकार, रायपुर एवं राजिम विभाग समन्वयक मानिकलाल साहू, सागरचंद अग्रवाल स्मृति शिक्षा समिति के उपाध्यक्ष श्रीमती श्रद्धा चंद्राकर, कोषाध्यक्ष रामजी तिवारी, सचिव एवं विद्यालय के व्यवस्थापक राहुल अर्ग्रवाल, सहसचिव जोगेन्द्र सिंह, सदस्य लालचंद जैन, प्रीतम सिंह दीवान, घनश्याम सोनी, महेश चंद्राकर, मानिकलाल साहू, साधारण सभा के सदस्य अनिल पुरोहित, तारा शर्मा, राही शर्मा केशव चंद्राकर, शैलेन्द्र तिवारी, नरेश जैन, विकास बग्गा था प्राचार्य नंदूराम निर्मलकर एवं समस्त आचार्यो ने विजेता छात्रों को बधाई देते हुए क्षेत्रीय प्रतियोगिता में विजयी होने के लिए शुभकामनाएं दी।

बागबाहरा। शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन और अनुशासित शैक्षणिक वातावरण के लिए स्थानीय सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय को बागबाहरा तहसील के अंतर्गत हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में ''उत्कृष्ट विद्यालय'' होने का सम्मान प्राप्त हुआ है। यह सम्मान अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) उमेश साहू द्वारा एक भव्य समारोह में विद्यालय के प्राचार्य नंदूराम निर्मलकर को प्रदान किया गया। सम्मान समारोह में बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक, शिक्षा प्रेमी, अभिभावक तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

समारोह में एसडीओ श्री साहू ने अपने उद्बोधन में कहा कि सशिमं (बागबाहरा) ने शैक्षणिक गुणवत्ता, अनुशासन, सांस्कृतिक गतिविधियों, खेल-कूद तथा सामाजिक मूल्यों के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। यही कारण है कि विद्यालय तहसील के अन्य विद्यालयों के बीच एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। सम्मान प्राप्त होने पर विद्यालय परिवार में हर्ष का माहौल व्याप्त हो गया। इस अवसर पर विद्यालय संचालन समिति के पदाधिकारी, आचार्यगण एवं विद्यार्थियों ने भी प्रसन्नता व्यक्त की और इसे विद्यालय की सामूहिक उपलब्धि बताया। प्राचार्य श्री निर्मलकर ने इस सम्मान के लिए आयोजन समिति एवं प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह उपलब्धि पूरे विद्यालय परिवार के परिश्रम और सहयोग का परिणाम है। उन्होंने विश्वास जताया कि भविष्य में भी विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेगा।

⊙⊙

मेधावी छात्र अलंकरण समारोह ग्राम भारती छ.ग.

मेधावी छात्र अलंकरण एवं प्रांतीय संस्कृति महोत्सव कोनी बिलासपुर- विद्याभारती छत्तीसगढ़ की योजनानुसार सरस्वती ग्राम शिक्षा समिति छत्तीसगढ़ के मेधावी भैया-बहनों का अलंकरण एवं प्रान्तीय संस्कृति महोत्सव का उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मान. विष्णुदेव साय जी मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ शासन अध्यक्षता मान. श्री अरुण साव जी उप मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ शासन, मुख्य वक्ता मान. डॉ. देवनारायण साहू जी प्रांतीय संगठन मंत्री विद्याभारती छत्तीसगढ़ विशिष्ट अतिथि श्री तोखन साहू केन्द्रीय राज्य मंत्री, श्री टंक राम वर्मा जी राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास, उच्च शिक्षा मंत्री छत्तीसगढ़ शासन मान. श्री गजेन्द्र यादव जी स्कूल शिक्षा, ग्रामोद्योग विधि एवं विधायी कार्य मंत्री छत्तीसगढ शासन मान बृजेन्द्र शुक्ला जी अध्यक्ष सरस्वती महाविद्यालय, मान, श्री रामभरोसा सोनी जी अध्यक्ष सरस्वती शिक्षा संस्थान, श्री रतन लाल चक्रधर जी सरस्वती ग्राम शिक्षा समिति छत्तीसगढ़ की गरिमामयी उपस्थिति में स्व. लखीराम भवन, सरस्वती शिशु मंदिर सरस्वती बिहार परिसर, मालाबन, सेन्दरी कोनी बिलासपुर में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर बिल्हा विधायक श्री धरम लाल कौशिक और तखतपुर विधायक श्री धरमजीत सिंह विशेष रूप से शामिल हुए। सर्वप्रथम अतिथियों के द्वारा सरस्वती, ओम, भारतमाता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर सरस्वती वंदना उपरान्त कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

इस कार्यक्रम में मान. मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय प्रथम स्थान प्राप्त किये हुए भैया-बहनों जो मेधावी छात्र परीक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किये थे उन 24 भैया-बहनों को प्रतीक, चिन्ह, प्रमाण पत्र एवं नगद राशि क्रमशः 2500, 2000, 1500 प्रदान किया।

इस कार्यक्रम में संस्कृति महोत्सव में पूरे छत्तीसगढ़ के 103 विद्यालय से 122 भैया, 405 बहन कुल 527 संरक्षक आचार्य 30 दीदी 79 कुल 109 इस प्रकार 636 लोगों की सहभागिता रही। इस कार्यक्रम में निर्णायक 20 एवं 15 व्यवस्था में कार्यकर्ता उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय सहित सभी अतिथियों ने सरस्वती स्कूल परिसर, कोनी में नव-निर्मित महाविद्यालय भवन का विधिवत पूजा-अर्चना कर लोकार्पण किया तत्पश्चात सरस्वती स्कूल परिसर स्थित लखीराम समा भवन में आयोजित सम्मान समारोह में मुख्यमंत्री ने शारदीय नवरात्रि की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि मेधावी छात्र-छात्राएँ अपनी मेहनत, अनुशासन और संस्कारों से प्रदेश का गौरव बढ़ा रहे हैं। महाविद्यालय का यह नया भवन शिक्षा और ज्ञान के विस्तार का प्रतीक है, जो समाज को नई दिशा देगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत स्थानीय भाषा में शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण, हाइटेक लाइब्रेरी, रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी सुविधाएँ विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जा रही हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे दृढ़ संकल्प और परिश्रम के साथ समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दें। विद्याभारती के विद्यालय के विद्यार्थियों में संस्कार और देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण होते है। आज गांव-गांव में इसके कारण बहुत बड़ा परिवर्तन दिखाई दे रहा है। पढ़ाई के क्षेत्र में भी यहां के भैया-बहन आगे रहते हैं।

अध्यक्षता कर रहे उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव जी ने कहा कि विद्या भारती शिक्षा के साथ संस्कार देने का कार्य कर रही है। उन्होंने संस्था द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा और भारतीय संस्कृति को सहेजने के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

विद्याभारती के प्रांतीय संगठन मंत्री डॉ. देवनारायण साहू जी ने संस्था के सिद्धांतो, विचारधारा और कार्य-प्रणाली की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरस्वती संस्थान द्वारा अब तक छत्तीसद में तीन महाविद्यालयों की स्थापना की गई है और सात प्रकल्प संचालित हैं। छत्तीसगढ़ में विद्याभारती नगरीय एवं ग्राम भारती के अंतर्गत 1,100 से अधिक विद्यालय हैं। इन संस्थानों के माध्यम से भारतीय संस्कृति और परंपरा को नई

पीढ़ी तक पहुँचाया जा रहा है.. जिससे योग्य और राष्ट्र के प्रति समर्पित विद्याथियों का निर्माण हो रहा है। विद्याभारती के आधारभूत विषय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संबंध में विद्यालयों में क्रिन्यावयन पर भी जानकारी दी।

इस अवसर पर नगर निगम महापौर श्रीमती पूजा विधानी, श्री भूपेंद्र सवन्नी, सरस्वती ग्राम शिक्षा समिति छत्तीसगढ़ के सचिव श्री पुरन्दन कश्यप, सरस्वती महाविद्यालय के सचिव श्री संतोष तिवारी, प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री सुदामा राम साहू, प्रांतीय सहसचिव श्री राम पाल सिंह, श्री सुजीत मित्रा प्रांतीय उपाध्यक्ष श्रीमती दिव्या चंदेल, श्री मुखतेज सिंह बदेशा अखिल भारतीय खेलकूद संयोजक, श्री सुहास देशपांडे अखिल भारतीय जनजाति शिक्षा संयोजक, श्री मुनेश्वर कौशिक अध्यक्ष सरस्वती शिशु मंदिर, प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री ठाकुर राम कुर्रे, प्रांतीय सदस्य श्री राजेन्द्र शर्मा, श्री गौरीशंकर कटकवार, श्री संतोष कुमार निषाद, श्री चिन्ताराम साहू, श्री गेंदराम राजपूत, श्री दिवाकर स्वर्णकार, श्री सोमेन ब्रम्हा, श्री देवेश सोनी, श्री दीनदयाल यादव, श्री सुरेश कुमार साहू श्री कुंज बिहारी साहू विद्याभारती के अन्य अधिकारीगण, कार्यकर्ता, प्राचार्य, आचार्यगण तथा बड़ी संख्या में विद्यार्थी और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

⊙⊙

छत्तीसगढ़, देवेंद्र नगर रायपुर का प्रवास

देवेन्द्र नगर, रायपुर –दिनांक 13अक्टूबर 2025सोमवार को विद्या भारती मध्यक्षेत्र की योजना अनुसार छत्तीसगढ़ प्रदेश के प्रवास अंतर्गत देवेंद्र नगर रायपुर, जिला केंद्र की शिशु वाटिका का अवलोकन संस्था के अध्यक्ष डॉ. अशोक जी त्रिपाठी एवं सचिव श्री संजय जी जोशी एवं मध्यक्षेत्र के शिशु वाटिका प्रमुख श्री प्रभातसिंह जी एवं छत्तीसगढ़ प्रांत के शिशु वाटिका प्रमुख श्री राम कुमार के साथ किया। जिसमें 12शैक्षिक व्यवस्थाओं की पूर्णता एवं उनका रख–रखाव, नियमित रूप से क्रियान्वयन के बारे में शिशु वाटिका प्रमुख दीदी एवं प्राचार्य श्रीमती अमरजीत कौर को उचित निर्देश दिए गए। इस अवसर पर आयोजित मातृ गोष्ठी में आई हुई सभी माताओं को 12शैक्षिक व्यवस्थाओं की जानकारी दी गई। उनको शिशुओं के विकास के लिए घर में रहकर किस प्रकार से माताओं को व्यावहारिक शिक्षा दी जा सकती है उसके तरीके बताए गए। माताओं को सुवर्ण प्राशन से बालक के स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव होता है। उसके बारे में जानकारी दी गई। एवं सभी माताओं से अपने बालकों को नियमित रूप से पुष्य नक्षत्र में सुवर्ण प्राशन कराने का आग्रह किया गया। कार्यक्रम के अंत में शिशु वाटिका की दीदियों की बैठक ली गई जिसमें उनको राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बारे में विस्तार से समझाया गया एवं फाउंडेशन स्टेज (श्वष्टष्टश्व+स्नस्ह्र) के बारे में भी जानकारी दी गई। सभी दीदियों को शिशु वाटिका का संदर्भ साहित्य पढ़ने का आग्रह किया गया एवं सुश्री इंदुमती काटधरे ताई द्वारा लिखित पुस्तक ''तत्त्व एवं व्यवहार'' सभी को पढ़ने का आग्रह किया गया। सभी माताओं एवं दीदियों ने शिशु शिक्षा की बात गंभीरता के साथ सुनी एवं आगे अधिक स्वाध्याय करने की बात कही एवं समिति पदाधिकारियों ने अधूरे कार्यों को पूरा करने हेतु प्रतिबद्धता जताई।

विभाग स्तरीय गणित व विज्ञान मेला

सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लुड़ेग 2025-26

लुड़ेग:- विद्या भारती अखिल भारतीय की योजना के अनुसार प्रतिवर्ष विभाग स्तरीय गणित एवं विज्ञान मेला का आयोजन किया जाता है इस परिपेक्ष्य में रायगढ़ विभाग का गणित व विज्ञान मेला का आयोजन जशपुर जिला के सरस्वती शिशु मंदिर उत्तर माध्यमिक विद्यालय लुड़ेग में संपन्न हुआ। इसके उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में श्री वेदानंद आर्य जी (विकासखंड शिक्षा अधिकारी) पत्थलगांव उपस्थित रहे, कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के अध्यक्ष महेंद्र कुमार अग्रवाल जी एवं विशिष्ट अतिथि श्री सुरेश कुम कुमार अग्रवाल जी, व्यवस्थापक श्री गोपाल गोयल जी, उपाध्यक्ष श्री धरमपाल अग्रवाल जी, श्री प्रेम लाल पटेल जी (संस्कृति बोध परियोजना मध्य क्षेत्र) भी उपस्थित रहे, तथा रायगढ़ विभाग के विभाग समन्वयक श्री वीरेंद्र विश्वकर्मा जी उपस्थित रहे, तथा वर्ग के वर्ग प्रभारी श्री संजय कुमार यादव जी (प्राचार्य सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जशपुर), स्थानीय विद्यालय के प्राचार्य श्री सीताराम प्रधान जी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं मंचस्थ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं मां सरस्वती, भारत माता और ब्रम्ह स्वरूप ॐ की प्रतिमा पर पूजा अर्चना कर किया गया। वंदना के पश्चात मुख्य अतिथि आर्य जी का स्वागत विद्यालय के अध्यक्ष श्री महेंद्र कुमार अग्रवाल जी ने शाल श्रीफल व तिलक लगाकर किया, मुख्य अतिथि जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भैया-बहनों की वैज्ञानिक क्षमता के विकास के लिए ऐसे कार्यक्रम बीच-बीच में होते रहना चाहिए। विभिन्न विधाओं में प्रतिभागी भाग लेकर अपने प्रतिभाओं का प्रदर्शन करेंगे एवं सफलता को प्राप्त करेंगे। श्री सुरेश कुमार अग्रवाल जी ने कहा कि सभी बच्चे अपने-अपने प्रतिभाओं को जागृत करेंगे, तथा अपने विद्यालय एवं अपने विभाग का नाम रोशन करेंगे। श्री गोपाल जी ने गणित और विज्ञान से संबंधित महत्वपूर्ण बार्ता की जानकारी दी इस कार्यक्रम में 12 विद्यालय के लगभग 300 भैया-बहनों ने भाग लिया। तथा अनेक विधाओं जैसे मॉडल, प्रश्न मंच, प्रयोग, प्रदर्श आदि में सम्मिलित होकर अपने कौशल को प्रदर्शित किया, जो की बहुत ही आकर्षक रहा जिसको देखने के लिए नगर वासियों का जमावड़ा हुआ था. जिसको देख कर सभी बहुत खुश एवं प्रसन्नचित हुए। साथ ही साथ अन्य विद्यालय के भैया -बहन इस कार्यक्रम को देखने आए थे, उनके कौशल को देखकर ऐसा लगा छोटे-छोटे वैज्ञानिकों का इस धरती पर अवतरण हुआ है जो बहुत ही सुंदर और आकर्षण का केंद्र रहा। सभी ने अपने घर से मॉडल की सामग्री लेकर आए और यहीं उसकी तैयारी की। और सभी ने अपने-अपने विद्यालय का अच्छा प्रदर्शन किया, साथ ही साथ अपने स्थानीय विद्यालय के अधिकाधिक भैया -बहनों ने भी भारी संख्या में भाग लेकर अधिकांश विद्याओं में स्थान प्राप्त किया।

इस कार्यक्रम के समापन के अवसर में मुख्य अतिथि श्री सालिक साय जी (जिला पंचायत अध्यक्ष) उपस्थित रहे, उन्होंने अपने उद्बोधन में सभी भैया-बहनों को कहा कि विज्ञान सूक्ष्म से सूक्ष्म बिंदुओं को स्पष्ट करते हुए वर्तमान विज्ञान की उपयोगिता, गणित का महत्व एवं उसके नुकसान के बारे में विस्तृत जानकारी दी और अपने विद्यार्थी जीवन के रोचक एवं संघर्षशील समय का वर्णन किया, जो अत्यंत प्रेरणा दायक था उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को कभी भी हार नहीं मानना चाहिए हमेशा प्रयत्नशील रहना चाहिए तो सफलता निश्चित ही मिलेगी जिंदगी में हार जीत तो लगे रहता है। हार को भी अवसर मानकर प्रेरणा लेना चाहिए और जीत को भी अत्यंत

प्रसन्नचित होकर और प्रयत्न करना चाहिए, उन्होंने सभी प्रतिभागी भैया - बहनों को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान की। मंचस्थ महानुभावों द्वारा सभी विजेता प्रतिभागियों को प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण पत्र द्वारा पुरुस्कृत किया गया। अंत में विद्यालय के पूर्व व्यवस्थापक, अध्यक्ष एवं वर्तमान कोषाध्यक्ष श्री सुरेश कुमार अग्रवाल जी ? द्वारा सभी अतिथियों, संरक्षण आचार्यों दीदियों एवं निर्णायक बंधु-भगिनीयो जो शासकीय विद्यालय से आए हुए थे उन्हें अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित क्या गया, तथा प्रतिभागी भैया -बहनों का आभार प्रदर्शन किया। इस सुअवसर पर प्रबंध कारिणी समिति के अध्यक्ष श्री महेंद्र अग्रवाल जी, उपाध्यक्ष धरम पाल अग्रवाल जी, व्यवस्थापक श्री गोपाल गोयल जी, सह व्यवस्थापक श्री संजय अग्रवाल जी, कोषाध्यक्ष श्री सुरेश कुमार अग्रवाल जी, सदस्य श्रीमती रमाबाई सहित अनेक विद्यालय के शासकीय शिक्षक गण, भारतीय जनता पार्टी के जिला मंत्री श्री मनीष अग्रवाल सहित अनेक वरिष्ठ भाजपा नेता विद्यालय हितेशी, संस्था प्राचार्य श्री सीताराम प्रधान जी, श्री संजय नंदे जी, श्री राजेंद्र डनसेना जी, श्री छात्रमोहन यादव जी, विजय कुमार नाग जी, श्रीमती रीता प्रधान जी, कुमारी मीनुका, कुमारी प्रियांजली, श्री श्रवण कुमार यादव जी, श्री राधेश्वर सिंह जी, श्री बानो प्रसाद जी, श्री चैतन राम यादव जी, सहित समस्त आचार्य दीदीयो, तथा किशोर भारती कन्या भारती के भैया-बहनों का विशेष सहयोग रहा।

⊙⊙

कनकी संकुल का आवर्ती प्रशिक्षण वर्ग

आज दिनांक 12/10/25/दिन रविवार स्थान विद्यालय भैसा

विद्यालय के संयोजक श्री कान्ती लाल धुरंधर आवर्ती प्रशिक्षण प्रमुख श्री पाठक, प्रधानाचार्य संकुल प्रमुख भारत दास वैष्णव समस्त प्रधानाचार्य ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया । संयोजक जी का उद्बबोधन प्राप्त हुआ ।

प्रथम सत्र -श्री मुकेश साहू जिला समन्वयक जी द्वारा योजना के विषय गृह कार्य क्यो और कैसे पर संवाद सत्र लिया गया ।

साथ ही गृह कार्य के लाभ और हानी पर चर्चा हुआ।

दितीय सत्र मे - आचार्य दीदी के द्वारा पाठ योजना का डेमो क्लास प्रदर्शन हुआ तीन स्तर

1)आधार स्तर - हिन्दी/ गणित विषय

2) प्राथमिक स्तर मे - अंग्रेजी विषय

3) मिडिल स्तर पर -गणित / विज्ञान विषय

के आचार्य दीदी ने सहायक शिक्षण समाग्री का प्रयोग करते हुऐ आनंद दायी समूह कार्य पोस्ट कार्ड के द्वारा डेमो क्लास लिया।

वर्ग मे जिला समन्वयक 01, प्रधानाचार्य 08, आचार्य 0 6, दीदी 47 , कुल 62 उपस्थिती रही।

अगामी आवर्ती प्रशिक्षण का योजना विषय स्थान तय करने के बाद विसर्जन प्रार्थना शान्ती मंत्र के साथ वर्ग का समापन हुआ

⊙⊙

बच्चों में वैज्ञानिक सोच विकसित करने विज्ञान मेला का आयोजन

राजिम– सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर द्वारा आयोजित प्रांतीय विज्ञान मेला का आयोजन श्री राजीवलोचन एवं भगवान श्री कुलेश्वरनाथ की पवित्र धरा में सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय राजिम में संपन्न हुआ, तीन दिवसीय कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि– श्री मयंक अग्रवाल जी (तहसीलदार – राजिम), विशिष्ट अतिथि– श्री रामभरोसा सोनी जी, (अध्यक्ष– सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर), अध्यक्षता– श्री राघोबा महाडिक जी (अध्यक्ष– श्री कुलेश्वर नाथ बाल कल्याण समिति राजिम) की उपस्थिति में कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना से हुआ। प्रांतीय विज्ञान मेला में छत्तीसगढ़ प्रांत से 9 विभाग – राजिम, रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, राजनादगांव, कोरबा, रायगढ़, सरगुजा, कोरिया, के कुल 308 प्रतिभागी भैया–बहन व संरक्षक आचार्य सम्मिलित हुए । कार्यक्रम में शिशु वर्ग, बाल वर्ग, किशोर वर्ग व तरुण वर्ग (कक्षा चतुर्थी से द्वादशी तक) के भैया–बहन विज्ञान प्रश्न मंच, विज्ञान प्रयोग, विज्ञान पत्र वाचन, विज्ञान प्रदर्श (मॉडल) में विभिन्न विषयों पर अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किये। भैया–बहन छत्तीसगढ़ प्रांत का प्रतिनिधित्व करने के लिए क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे, क्षेत्रीय प्रतियोगिता हरदा मध्य प्रदेश में आयोजित होगी। कार्यक्रम को संपन्न करने के लिए सरस्वती शिक्षा संस्थान से श्री राम कुमार वर्मा (सह प्रांत प्रमुख छत्तीसगढ़), कार्यक्रम के प्रभारी श्री राजेंद्र साहू , निर्णायक श्री दीपक देवांगन, श्री दीनदयाल साहू, श्री धनुर्जय साहू, श्री धनउ राम साहू, श्री मुरलीधर साहू, उपस्थित रहे। विज्ञान प्रदर्शन मॉडल के निरीक्षण एवं निर्णय के लिए आसपास के विभिन्न शासकीय, अशासकीय विद्यालयों से विज्ञान के व्याख्याता शिक्षको को आमंत्रित किया गया, जिसमें समस्त निर्णायकों ने विज्ञान प्रदर्शन को देखकर सराहना की। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विद्यालय संचालन समिति श्री कुलेश्वरनाथ बाल कल्याण समिति के उपाध्यक्ष– श्री अशोक श्रीवास्तव, सचिव– श्री अजय साहू, कोषाध्यक्ष– श्री रामकुमार गोस्वामी, सहसचिव– सुश्री छाया शर्मा, सदस्य– श्री कालूराम ध्रुव, श्री सुरेंद्र साहू , श्री जीवनलाल साहू, विद्यालय के प्राचार्य– श्री गोविंद राम चौधरी, प्रधानाचार्य नामदास लहरे एवं समस्त आचार्य दीदी सहित पूरे विद्यालय परिवार ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक विवेक सक्सेना सचिव सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर आयुर्वेदिक कालेज के पीछे 492010 छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं स्वास्तिक प्रिंटरी हनुमान मंदिर रोड, पवार सभा भवन के पास, न्यू चंगोराभाठा, रायपुर मो. - 9826446695 से मुद्रित सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर से प्रकाशित, संपादक - श्री उदय रावले,नवम्बर 2025, दूरभाष - 0771-2262770

विविध कार्यक्रम

सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर में
मा. गजेन्द्र यादव स्कूल शिक्षा मंत्री छत्तीसगढ़ शासन

सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर में
मा. अवनीश भटनागर उपाध्यक्ष विद्याभारती अ.भा. शिक्षा संस्थान

मेधावी छात्र अलंकरण समारोह रायपुर

मेधावी छात्र अलंकरण समारोह रायपुर

सरस्वती शिशु पाहंदा अखिल भारतीय खो-खो विजेता टीम

मेधावी छात्र अलंकरण समारोह रायपुर

सरस्वती शिशु मंदिर हथखोज (दुर्ग)

सरस्वती शिशु मंदिर हथखोज (दुर्ग)

मेधावी छात्र अलंकरण समारोह 2025

मेधावी छात्र अलंकरण समारोह सरस्वती ग्राम शिक्षा समिति कोनी बिलासपुर

मेधावी छात्र अलंकरण समारोह सरस्वती ग्राम शिक्षा समिति कोनी बिलासपुर

मेधावी छात्र अलंकरण समारोह सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर

मेधावी छात्र अलंकरण समारोह सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर

प्रेषक:
सरस्वती शिक्षा संस्थान
आयुर्वेदिक कॉलेज के पीछे, रोहिणीपुरम,
रायपुर (छ.ग.) पिन- 492 010 फोन - 0771-2262770

प्रति,

पिन.

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक विवेक सक्सेना सचिव सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर आयुर्वेदिक कालेज के पीछे 492010 छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं स्वास्तिक प्रिंटरी हनुमान मंदिर रोड, पवार सभा भवन के पास, न्यू चंगोराभाठा, रायपुर मो. - 9826446695 से मुद्रित सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर से प्रकाशित, संपादक - श्री उदय रावले, नवम्बर 2025, दूरभाष - 0771-2262770